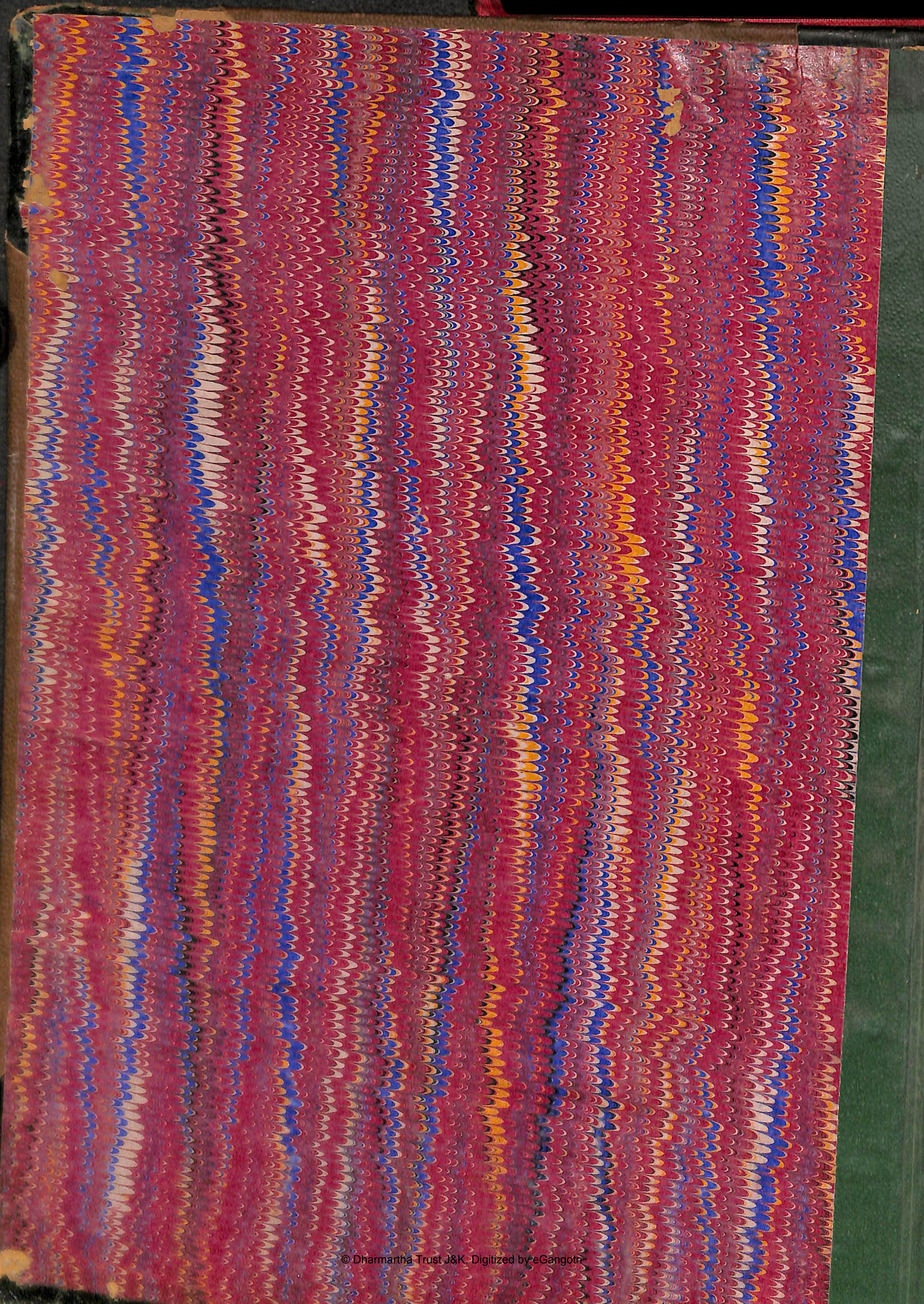
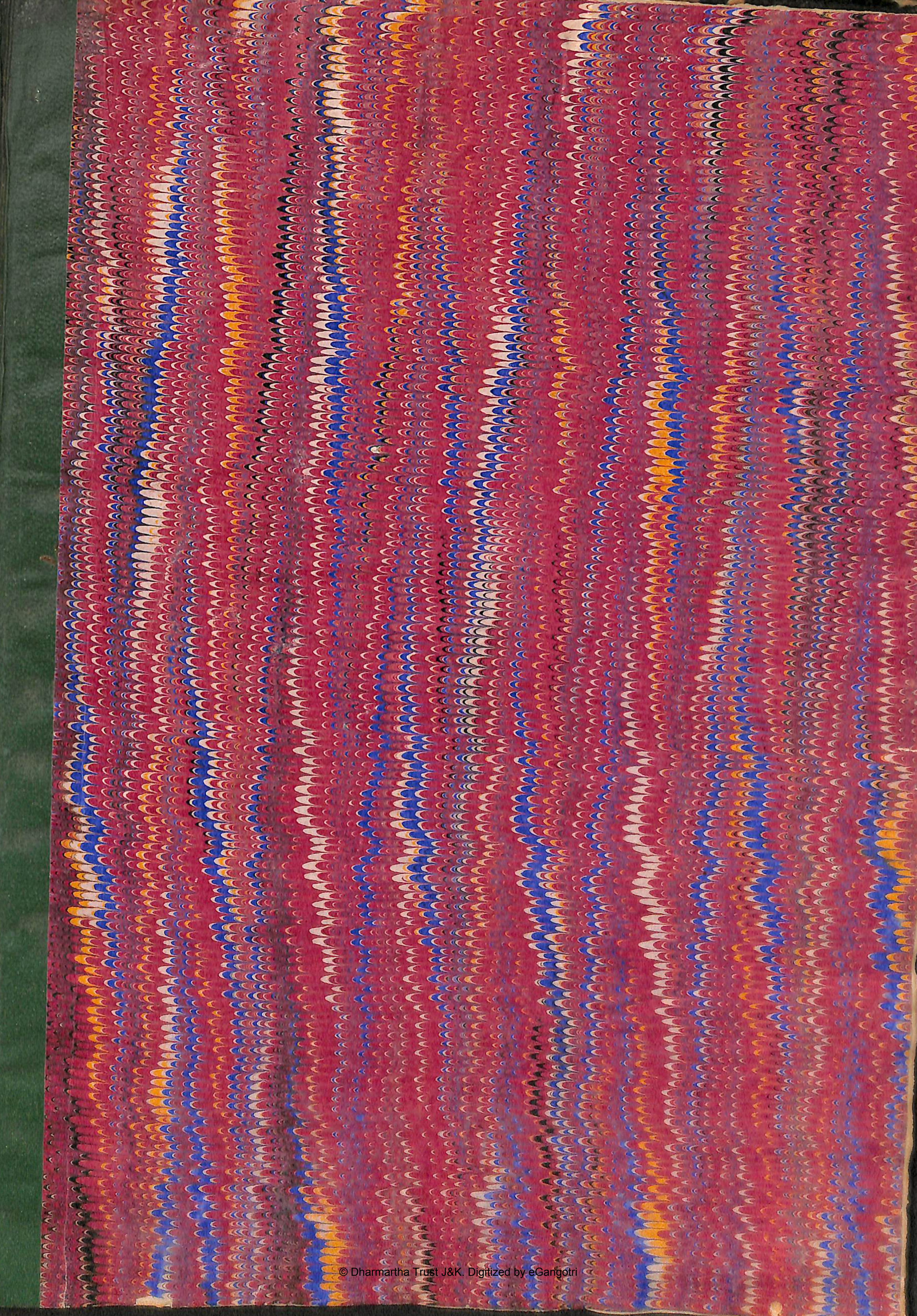
धनञ्जयविजयः
(नाटकम्)

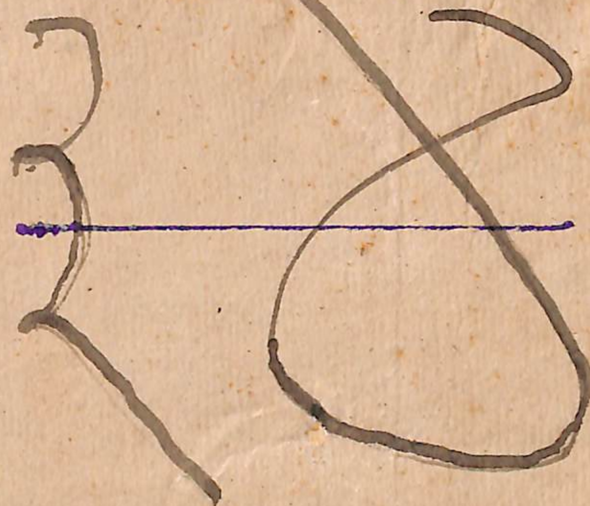
१६





धनञ्जयविजयः

नाटकं



5405

F. = 78.

Complete.


श्री रणवीर पुस्तकालय
मंदिर श्रीरघुनाथ जी

ध. वि.
ना. टी
१

ॐश्रीगणेशायनमः ॐनमः चंडिकायै ॥
हरे लीला वराहस्य दंष्ट्रादंडः स पातु वः
हेमाद्री कलशा यत्र धात्री छत्र श्रियं दधौ १

पारथ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक

नखः प्रणमाङ्कु विपदः प्रणतार्ति हन्त्र्याः न्यस्तं
पदं महिष मूर्धनि चंडिकायाः वैरी यदी-
य नखरांशु परीत शृंगः शाका सुधां कित
नवांबु धर प्रभो ऽभूत् ॥ २

ਅਰਥ

ਪ੍ਰਣਾਮੰ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਪੁਰਖ ਤਿਨਕੀ ਪੀੜ ਹਰੈ
ਦੂਰ ਕਰਣੇ ਵਾਲੀ ਚੰਡਿਕਾ ਭਗਵਤੀ ਤਿਸਕਾ
ਜੋ ਮਹਿਸ਼ਾਸੁਰ ਦੈਤ੍ਯਕੇ ਸਿਰ ਉਪਰ ਸ੍ਥਾਪਿਤ
ਕਿਯਾ ਹੁਆ ਸੋ ਪਗ ਤੁਮਾਰੀ ਰਛਿਆ ਕਰੇਂ ਦੂਰ
ਕਰੇ ਵੈਰੀ ਜੋ ਮਹਿਸ਼ਾਸੁਰ ਜਿਸ ਭਗਵਤੀ ਕੇ ਨਖ
ਕੇ ਤੇਜਕੀ ਸ਼ੋਭਾ ਕਰਕੇ ਵ੍ਯਾਪਤ ਜੋ
ਸ਼ੰਗ ਸੋ ਮਾਨੋ ਨਵੀਨ ਮੇਘੋਂ ਕੇ ਧਾਰਣੇ ਵਾਲੇ ਨਗਾਂ
ਗ ਵਾਲਾ ਜੈਸੇ ਉਜ੍ਵਲ ਪਰਬਤ ਸ਼ੋਭਤ ਹੋਤਾ
ਤੈਸੀ ਸ਼ੋਭਾ ਭਗਵਤੀ ਕੇ ਚਰਣੋਂ ਕੀ ਔਰ ਮਹਿਸ਼ਾ
ਸੁਰਕੇ ਸ਼ੰਗਕੀ ਮਿਲਕਰਕੇ ਹੋਈ ਹੈ॥

ਕਬਿੱਤ

ਐਸੀ ਮਹਿਮਾ ਜਾਕੀ ਚੰਡਿਕਾ ਭਵਾਨੀ ਜਾਂਕੇ

य वि
ना टी.
२

ਧਰਾਂ ਦੀ ਵਡਾਈ ਤੁਸ ਕ੍ਰਿਪਾ ਗੁਰਾਂ ਜਾਨੀਜੀ
ਕੀਤੇ ਹੈ ਪ੍ਰਸਨ ਜੇਹੜੇ ਹੈਨ ਜਨ ਜਾਨ ਜਾਵਣੇ
ਤ ਆਤੁਮਾਨ ਕਿਤੇ ਸੋਗਾਮਾਧ ਜਾਨੀਜੀ ੧
ਤਿਸ ਗੁਰ ਕੇਤਧਤੂੜੇ ਸੀਸਾਂ ਦਿਵਕੇ ਪਗਤਾਂਕੀ
ਨਮਸਕਾਰੀ ਕੇਤ ਸ੍ਰੰਗਾਨੇ ਸੁਣਾਜੀਜੀ

ਸ਼੍ਲੋਕ॥

तदः सारस्वतं चक्षुः समुन्मीलितु सर्वदा
यत्र सिद्धांजना येने गुरु पादा ब्ज रेणवः २

ਅਰਥ

ਤੁਸਾਂਤਾਂ ਸਰਸ੍ਵਤੀ ਸੰਬੰਧੀ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰ ਗ੍ਯਾਨ ਰੂਪ
ਨੇਤ੍ਰ ਸਰਵਦਾ ਖੁੱਲੇ ਦਿਵਾਸਰੇ ਪ੍ਰਸਪਤੇ ਜਿਨ
ਨੇਤ੍ਰਾਂ ਵਿਖੇ ਗੁਰਾਂ ਦੇ ਚਰਣ ਕਮਲ ਤਿਨਕੀ ਜੋ
ਧੂੜ ਹੈ ਸਿਧਾਂਜਨ ਰੂਪ ਹੈ ਗ੍ਯਾਨ ਵਿਖੇ ਪ੍ਰ
ਸਿਧ ਜੋ ਅੰਜਨ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਜਿਸ ਅੰਜਨ ਦੇ
ਪਾਵਣੇ ਕਰ ਤੁਰਤ ਦਿਸ਼੍ਟਿਗਤ ਵਸਤੂਆਂ ਤੀਨ
ਕਾਲ ਵਿਖੇ ਗੜੇ ਦਬੇ ਹੋਏ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰ ਦੀਤੇ

ਦੋਹਰਾ

ਗ੍ਯਾਨ ਰੂਪ ਜੁ ਆਪਣੂ ਪ੍ਰਭੂ ਅਗ੍ਯਾਨ ਦੇ ਤਰਣਕ

𑆑𑆴𑆠𑆳𑆧𑆁 𑆠𑆴𑆤 𑆩𑆁𑆑𑆤 𑆑𑆵 𑆓𑆶𑆫𑆶 𑆪𑆫𑆳𑆤𑆑𑆵 𑆥𑆷𑆫

𑆨𑆮𑆠𑆶

𑆑𑆽𑆁 𑆥𑆠𑆬𑆼 𑆩𑆳𑆪𑆑𑆼 𑆠𑆩𑆽 𑆩𑆤𑆑𑆳 𑆠𑆫𑆥
𑆑𑆯𑆵 𑆩𑆼 𑆠𑆼 𑆑𑆴𑆩𑆑 𑆑𑆷𑆫𑆥𑆾𑆑𑆳 𑆤𑆤𑆩𑆁𑆓𑆼𑆢𑆂 𑆩𑆁
𑆩𑆾𑆁𑆤 𑆑𑆴𑆠𑆼 𑆤𑆓𑆳𑆫𑆶 𑆤𑆬𑆢𑆂 𑆠𑆩𑆵𑆑 𑆓𑆶 𑆩𑆁
𑆠𑆼 𑆢𑆣𑆽𑆤 𑆥𑆶𑆑𑆤𑆶𑆤 𑆩𑆥𑆷 𑆩𑆳 𑆑𑆥𑆼𑆠𑆶𑆬 𑆓𑆴𑆬𑆳
𑆠𑆬𑆣𑆠𑆑 𑆩𑆥𑆤𑆼 𑆩𑆓𑆼𑆑 𑆓𑆶𑆬 𑆑𑆴𑆥𑆳𑆑𑆾 𑆤
𑆬𑆢𑆥 𑆥𑆶𑆫 𑆑𑆷𑆫 𑆩𑆥𑆤 𑆤𑆑𑆫 𑆓𑆶𑆤𑆩𑆠𑆵 𑆑𑆷𑆑
𑆩𑆑𑆷𑆫 𑆩𑆥𑆤 𑆓𑆴𑆠 𑆑𑆴𑆬𑆤𑆼 𑆓𑆴𑆫𑆵 𑆤𑆁𑆓𑆼 𑆥𑆶𑆑𑆵
𑆫𑆼 𑆑𑆴𑆠 𑆩𑆼𑆁𑆩𑆼 𑆑𑆷𑆫𑆼𑆢 𑆥𑆶𑆑𑆵𑆫𑆼 𑆓𑆴𑆬𑆼 𑆓𑆫𑆓𑆤
𑆫𑆽 𑆥𑆩𑆬𑆼𑆤 𑆤𑆤𑆫𑆶 𑆑𑆶 𑆠𑆼𑆫𑆵 𑆩𑆣𑆶𑆫𑆵 𑆣𑆼𑆫𑆑𑆥𑆠𑆼
𑆩𑆤𑆩𑆫𑆶 𑆤𑆠𑆼 𑆓𑆶𑆤𑆥𑆩𑆼𑆁 𑆓𑆫𑆓𑆤𑆩𑆼 𑆓𑆶𑆤𑆂 𑆓𑆳𑆫
𑆑𑆠𑆼 𑆣𑆼𑆫𑆽𑆤 𑆠𑆶𑆩𑆽 𑆑𑆷𑆠𑆼 𑆓𑆣𑆳𑆫 𑆤𑆠𑆼 𑆠𑆩𑆵 𑆠𑆼
𑆮𑆓𑆳𑆫 𑆣𑆤𑆬𑆴 𑆩𑆬𑆵 𑆠𑆶𑆑𑆫 𑆩𑆫𑆠𑆠𑆼 𑆑𑆥𑆳𑆥𑆂
𑆤𑆑𑆯𑆴 𑆑𑆬𑆵 𑆑𑆬𑆩𑆽 𑆩𑆼𑆫 𑆩𑆳𑆫𑆑𑆾𑆠𑆶𑆢𑆂 𑆠𑆫
𑆠 𑆤𑆼 𑆬𑆴𑆑𑆾 𑆪𑆩𑆠𑆤𑆼 𑆥𑆶𑆫 𑆬𑆠𑆣𑆫𑆶

𑆩𑆢𑆢𑆴 𑆠𑆬𑆵𑆣 ॥

प. वि.
नाटी.
२

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
3
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

नाट्यंते सूत्रधारः सूत्रः समंता दवलोक्य प्रहे
रमणीयता प्रभातस्य तथाहि

श्लोक

दाराणां स्मर वैरिणो रतिपति मीत स्त्रिलोकी
जितः स्फुरत् पंकज कोटरो दरजुषे निद्रा विरा
मेश्रियः प्रत्युद्गच्छ मराल पक्ष पटद ध्वान प्रबंधा
नुगं भृंगी मंगल गाथिके वसततं प्रोत्कूजति
प्राङ्गणे ॥ २ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

पुनः सरिता अवलोक्य अहो रमणीयः शारदारंभः
यतः सरो हरति मे चेतः प्रोन्मूर्छत्यम्भ जडम्ले

[illegible]

[illegible]
[illegible]

ध. वि.
ना. टी.
५

[illegible]

अपिच श्लोक ॥

निष्क्रम्या पृथिवी सशा हललता निर्द्ई र्दिनं चांब
रं सखका मल नारके नु सरितः काशाग्रसूनां
किताः तोयं वीतविषं सरांसि विकस त्पद्मानि
शुभ्रादिशा द्रष्टुं सम्प्रति शारदीं श्रिय मिमां
मन्ये प्रवृत्तो हरिः २॥

शुभं॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ध वि· [illegible]
ना टी· [illegible]
६

[illegible]

[illegible]
[illegible]

6

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

नेपथ्याभि मुख मवलोक्य कथं लिखितह।
स्तः समायाति ततः प्रविश्य पुरुषो लिखित।

मर्पयति सूत्रधारः विमृश्य वाचयति प्रशस्ति
प्रशस्ति सहितः । श्रीमान् जयदेवः

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ध. वि
ना टी.

[illegible] ॥ [illegible]

श्लोक

अर्थि प्रत्यर्थि लक्षेषु प्रपरां सुख चेतसं यं परां
सुखतां निस्वः केवलं परयोषितः यस्य चेतसि नि
र्व्याजं हृदयं तूल कणायते क्रोधे विरोधिनां सैन्यं
प्रसादे कनकोच्चयः ॥

परय

रंगा [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆢𑆴𑆱𑆼 𑆍𑆫𑆼𑆁 𑆤𑆴𑆱𑆫𑆷𑆥𑆛 𑆑𑆫𑆑𑆼 𑆫𑆷𑆥𑆴𑆮 𑆫𑆷𑆢𑆼𑆮𑆵𑆤𑆪𑆳𑆂
𑆠𑆶𑆩 𑆍𑆱𑆥𑆓𑆫𑆠𑆼𑆁 𑆥𑆫𑆩𑆠𑆫 𑆠𑆽𑆫𑆼 𑆠𑆼 𑆱𑆶𑆤𑆼𑆫𑆥𑆫
𑆢𑆠𑆽 𑆠𑆶𑆩 𑆲𑆳𑆤𑆑𑆼 𑆃𑆤𑆫𑆑𑆫 𑆍𑆠𑆳𑆠𑆼 𑆠𑆿𑆫 𑆑𑆫𑆽𑆪𑆢𑆴
𑆩𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆩𑆽𑆁𑆑𑆵 𑆱𑆼𑆤𑆽 𑆠𑆶𑆩 𑆲𑆳𑆤𑆠𑆳𑆠𑆼

𑆑𑆽𑆠𑆫

𑆫𑆁𑆓 𑆫𑆷𑆥 𑆥𑆛𑆬𑆽𑆑 𑆥𑆶𑆤𑆽 𑆥𑆳𑆛𑆠𑆫𑆑𑆠𑆪𑆽 𑆓𑆳𑆪𑆇
𑆑𑆽𑆬𑆳𑆠 𑆥𑆶𑆫𑆩 𑆥𑆫𑆢𑆼𑆯𑆳 𑆑𑆫 𑆍𑆂 𑆥𑆲𑆑𑆳 𑆠𑆳𑆪𑆇
𑆤𑆛𑆳𑆪𑆫𑆪 𑆥𑆁𑆣𑆵𑆬𑆂 𑆑𑆫𑆠 𑆢𑆪𑆠 𑆢𑆴𑆍𑆫 𑆥𑆳𑆥
𑆠𑆴 𑆥𑆛𑆥𑆳𑆠𑆴 𑆑𑆶𑆯𑆬𑆳𑆠𑆽 𑆲𑆼 𑆫𑆳𑆓 𑆱𑆵 𑆥𑆫𑆑𑆳𑆫

𑆱𑆮𑆽𑆪𑆳

𑆱𑆷𑆫𑆠𑆼𑆁 𑆣𑆵𑆫 𑆓𑆁𑆨𑆵𑆫 𑆘𑆠 𑆣𑆵𑆫𑆠𑆼 𑆯𑆳𑆫𑆢𑆑𑆵 𑆱𑆼𑆤𑆽𑆁
𑆑𑆫𑆠 𑆤𑆴𑆠 𑆱𑆷𑆫𑆠𑆼𑆁 𑆱𑆷𑆫𑆠𑆼𑆁 𑆱𑆼𑆫 𑆓𑆴𑆫𑆣𑆳𑆤𑆑𑆼 𑆍𑆫
𑆱𑆼𑆁 𑆑𑆁𑆤𑆥𑆫 𑆢𑆁𑆤𑆽 𑆲𑆳𑆫 𑆱𑆤𑆠𑆷𑆫𑆠𑆼 𑆱𑆷𑆫𑆠𑆼𑆁 𑆠𑆶𑆩
𑆥 𑆢𑆠𑆲𑆳𑆑𑆼 𑆥𑆑𑆳𑆫𑆷𑆥𑆼 𑆨𑆓𑆢𑆤𑆑𑆽 𑆣𑆪𑆳𑆤 𑆨𑆫 𑆱𑆷
𑆫𑆠𑆼𑆁 𑆱𑆷𑆫𑆠𑆼 𑆠𑆼𑆫 𑆥𑆛𑆍𑆩 𑆍𑆩𑆳𑆁𑆤𑆼𑆁 𑆤𑆳𑆥 𑆢𑆴𑆯
𑆪𑆳𑆠 𑆲𑆪𑆍𑆫 𑆫𑆳𑆁 𑆯𑆷𑆫𑆠𑆼

थ वि॰
ना टी॰
८

8

संस्कृत

सच प्रसादेन रंग मण्डनं नाम नटं समादिशाति

श्लोक

इह शारदि विराज द्वारि जेतं सितायां प्रथम विग
तनिद्रः श्रीकरा श्लिष्टवक्ता: शिथिल यति मुरारि
र्योगनिद्रा मुरागम् तदय मखिललोकस्योत्सव:
किंमुनर्नः ॥

पारथ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

तदिदानीं भवता वीर रसाद्भुतं रूपकं अभिनीय
गदाधर प्रभावोऽस्मत्परिषदा नंदनीयेति किं
नाम तादृशं रूपकं आः ज्ञातं स्मृत्वा

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]

𑆮𑆖𑆤

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक

उत्थं कवि कुले रत्नि कुमान् यत्र सरस्वती संश्रिता
यति धात्रीव नितांतं मधुरं गिरं तत्राभव उपाध्या
यो नारायण समाह्वयः जितवादी सहस्रोत्रः
प्रायं वादी स्वराभिधम्

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत प्रसिद्ध श्लोक

कृत संध्य सनात् प्रयत्नतो ह्यभयं भूत गणाय ।
योगिनः निज मंडल भेद शंकितो भय मेकस्य र
वे रभूद्यतः ॥ तद्भूत कांचनो नाम समस्त गण

य वि·
ना टी·
११

वल्लभः गोष्ठी शालेव विद्यानां यस्य जिह्वा विराजते

[illegible]

[illegible] ॥

संस्कृत

तेन कृतो धनंजय विजयो नाम व्यायोगो ऽभिनेतव्यः

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

नेपथ्याभि उख मवलोक्य कः को अत्र भोः प्रविश्य

ध वि
ना टी.
१२

पारि पार्श्विकः भावकोसि भो भो १ **सूत्रधारः**
आहूयतां धनंजय विजयाभिनय कुशलो नटवर्गः
पारिपार्श्विकः तथा इत्युक्त्वा निष्क्रान्तः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत श्लोक

प्राचीमवलोक्य स्थित्वा १ चिरमज्ञातः सम
य वशात् कोऽपि तेजसो निचयः प्रगटी भवति
विवस्वानेष किरीटीव समय उत्तीर्णः २॥

[illegible]

[illegible]

प वि
ना.टी
१३

13

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

ततः प्रविशति विराटामात्येन सहार्जुनः अर्जुनः

सोऽस्माकं अनुकूलं दैवं लक्ष्यते यतः

श्लोक

यालता न्विद्यते नैव लग्ना सम्प्रति पादयोः
गुरु राज्ञो भियातव्यः स्वय मेव समागतः ॥

संस्कृत

सूत्रधारः सहर्षमवलोक्य अये परिगृहीता न्नेनवे षः भ्रामलकः प्रवृत्त स्तदहं पात्रांतराणि प्रगुनयामि इति निष्क्रांतः प्रस्तावना

मारथ

[illegible]

पं वि. ना टी. १४

14

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत नायकः सहर्षम्

श्लोक

गो रक्षणं सकल शात्रव मानभंगं स्त्रीषी विराट नृ
पते रूपकारिणश्च पर्याप्त मेक मपि यत् समरो
त्सवाय सर्वं तथा मिलित मत्र ममेव भाग्यैः ३५
सा मनोरथ सम्पत्तिः स एवहि महोत्सवः
निर्वापयंति यद्वैरं परिपंथिषु मानिनः ३६

संस्कृत

अमात्यः देव नेयं संग्रामस्य भूमिः २

प वि·
ना·टी·
१५

15

[illegible]

सर वीज़ प्रत्रू नर तुप पतुम पार पाप न
र श्रुतुवल तराचेतै रसा नर तंल पाप सं
वै तन सारनखाप सुमायने जिलाप सै नेर
नरराचेतै मारसुरवतत पव नरकी दंत व
तैं पाप सर दिव ददाप सर नेरेतगापसाचे
तै

सवैय

तनदी पव वथ सैवतु सुन दाव लगा दजीव
वसावै श्रुतुसावै तुलसाडि दिवैय सै तैव वती
वै ततसवसावै सैठ संपत सावतते सव सैठ
पती पत पातते तवै प सैठ सान दिवै वती
लान तै तुनने पत्रे दिवे वतैसवै २८

श्लोक

सुवै दसु नतदसु तुप सैलु दिवती वतं
पसै वती सुसाव पैलूप पैगप तुजि पे वती

दपतु

वत सपवने वैंदद नवलाव गपे संगल से
ले गादति दसा सुगललः तैरि सर्वदि स

पं. वि. [illegible]
ना टी. [illegible]
१८ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
16 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक

निर्दग्ध कालके यस्य निवात कवच द्विषः
कौरवास्ते कियन्मात्रं रणाराधित शूलिनः ३५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

नायकः साधु सम्बोधनः साधु

[illegible]

[illegible]

प वि [illegible]
ना टी [illegible]
९ [illegible]
[illegible]

श्लोक

यत्सर्वजैरधिगतं भुज विक्रमेण तत्प्राप्य राज्यमा
खिलं कपटाक्षहस्ता: गा: साम्प्रतं हरसि भिल्लइ
व त्वयाद्य सा पत्रय: कुल गुरु विहितो विधुर्न:

[illegible]

17

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अमात्यः देवी श्लोक

सुयोधन चरित्रेण शशिनोऽवतं शिरः चरित्राणि
तवैवाय कुर्वंतु परमोन्नतम् ॥ नायकः विचिंत्य
कथमयं नगर समीपे त्रिम समरोप करणा नयनाय

प वि.
ना.टी.
८

प्रहितः प्रतिपन्न सारथ्य श्चिरयति कुमारः

[illegible]

[illegible]

[illegible]

18

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

ततः प्रविशति विराट कुमारः कुमारः देव प्र-
शष्टित वा देशात्तदा रोहत्वा युष्मान् अमात्यः स
विस्मयं नायक मवलोक्य

भाषा

[illegible]

19

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्लोक ॥

विरचित समयो वितांगभूषः
पषभातिः जलधर निकरो परोध शून्या रवि रि
परिहित भूषित वेष
व राजसुतः शारत् प्रचंडः ॥

संस्कृत पुनर्निपुनमवलोक्य श्लोक श्रेषन्ने यन्त्रि
त जलधर धान मेते तरंगा भूमिं पादै र्यदपिच पुङ्
र्दत्तिऐ रा लिवंति यानैात्सुक्य यदपि चलना ज्ञा
लधेर्मज्जयंति त्वद्दोर्दंड द्वितय वशगा तत्समया ज
य श्रीः ॥

पारस्य

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]

20

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत नायकः अमात्य

वयं मिदानींगाः प्रत्यानेतुं प्रस्थिताः स्त्वं गोहरणे
द्विग्नं पौरजनं समाश्वासय अमात्यः यदादिशति देव
स्तथा करोमि इति निष्क्रांतः

पारथ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

21

[illegible]

संस्कृत

नायकः कुमारं प्रति यावन्मा गमत् हरे गाव स्ता
वन्नोदयाख्यान् कुमार स्तथा करोति नायकः रथवेगं
निरुध्य ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक ।।

आलिंगितो वसुधां निज भुज दलिता मिवानेतुम

थ वि. मी वदन विगत चरणा इव संलक्ष्यंते जवादश्वाः
ना. टी. अपिच विछिन्ना रथचक्र पद्धति रियं हेलाल्हते
४४ वाजिना मायांतीव जवेन सन्मुख ममी मार्गस्थिताः
प्राणिनः खेदं पाद तलाहते रिव धुरो गंतुं गता ने
हते वाहाना मन्द्रक्षल मारुत भरो हृतोपि धूलिव्रजः

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆱𑆮𑆽𑆪𑆳

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆑𑆮𑆴𑆠𑆶

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆢𑆪𑆠

[illegible]
[illegible]

प वि नाटी. २३ ਸਤਥੀ ਰਖਿਓ ਵਡਾਨ ਕੀ ਤਸਤਰੂ ਗਲਤ ਥੀ ਕ
ਸਰਸਾਂ ਕਰਕੇ ਵ: ਕਤਾਂ ਸਰਾ ਜਿਲ ਤੁਦਾ ਪੁਰਸ਼ੋਤ
ਮੰ ਸ਼ਾਵਕੇ ਮੁਰਾ ਦਿਲ

संस्कृत

नेपथ्याभि मुख दवलोक्य रेरे गोपाला अलं वि
षादेन तथाहि

श्लोक

सिंचंतः करुणा रसेन हृदयं यावं न वत्सा अमी
मातृ मार्ग विलोकन व्यसनिनो संचंतिहं वारवार
याचंते नहि याव देव शिशवः पातु मयोनोत्क
का स्तावज्ञाव इहेत्य वेत भवतो चेतोज्वरः शाम्यतु

ਅਰਥ

ਕੂਣਾਂਤ ਸਰਸੁਮ ਕੋਮਰਕਰਕੇ ਕਤਾਂਤੇ ਤੇ ਗੁਪਾਲੋ
ਤੂੰ ਸਤ ਵਿਸਾਂਕਰੰ ਤੁਸ ਚਤ ਵਛਰਤੇਨ ਯਾਂਵਤ
ਕਾਲ ਮਰਚੰਤ ਕਰਸੁ ਰਸ ਕਰ ਕਰਕੇ ਤੁਕਾਚਰੇ ਨ
ਡੀ ਸਿੰਚਨ ਕਰਕੇਤੇਨ ਸੌਰ ਮਾਂਮਨੀ ਸਾਂਤਾਂਕੂ ਸ
ਰਗਕਾਂ ਹੈ ਕੈਮਨਾਂ ਕੈਓਤੇ ਦਚਸਨ ਜਿਨਕੈ ਜਿਤ
ਨਕਾਲ ਤੰਦਾਂ ਦਸ਼ਕਾਚੰਕੇ ਨਡੀ ਤਚਾਂਗਤੇਤੇ ਜਿਤ
ਨਾਂ ਕਾਲ ਸ਼ਿਸ਼ੂ ਕੁਗਾਧ ਮਾਨ ਕਰਲੈਕੇ ਨਡੀ ਤਤ੍ਰਕੇ

𑆤𑆠𑆳 𑆥𑆷𑆫𑆮𑆑 𑆣𑆳𑆪𑆤𑆳 𑆑𑆫𑆠𑆮𑆾𑆤 𑆪𑆳𑆮𑆠𑆑𑆳𑆬 𑆥
𑆫𑆾𑆪𑆁𑆠 [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प वि
ना टी.
२४

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

24

संस्कृत कुमारः

आघ्रुष्म ञ्जनम हरे कुरु बलम् यतः श्लोक
वाजि व्राज खुराभिघात दलित क्षोणी रजोभिः पु
रः सान्द्रै जीर्ण कपोतकंठ रुचिभि र्व्योमेद माच्छा
द्यते किंवाकेन करींद्र गंड विगलद्दानाम्बु धारा
गणा स्तोयं स प्रथयंत्यमी परिमल प्रोद्गारि मंदानि
लः ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆅𑆠𑆴 𑆥𑆳𑆫𑆑𑆳𑆯𑆳 𑆓𑆴𑆤𑆑 𑆥𑆾𑆩 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆑𑆫𑆑𑆼 𑆑𑆪
[illegible]
[illegible]
[illegible]
𑆪𑆤 𑆑𑆫𑆠𑆼𑆠𑆼

𑆑𑆮𑆴𑆠𑆶

𑆠𑆶𑆪𑆼𑆠𑆼𑆁 [illegible]
𑆱𑆾 [illegible] 𑆪𑆼𑆠𑆼𑆁
[illegible] 𑆪𑆼𑆠𑆼𑆁
[illegible] 𑆪𑆼𑆠𑆼𑆁
[illegible]
[illegible] 𑆪𑆼𑆠𑆼𑆁
[illegible]
𑆑𑆠𑆥𑆠𑆪𑆼𑆠𑆼𑆁

𑆱𑆶𑆠𑆫

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत नायक:

स व्यक्तं गुरुबले तथाहि श्लोक

आधूत चामर छ्रदत्त सितात पत्र छुत्तिम क्रांत
भय विधूत पत्रि चक्रं प्रत हले क्रूरयते भैर सू
माला शांवे ध्वनि त्रशाद राप्य महगं पुरस्तात्

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

ਨਾਯਕ ਕਹਤਾਹੈ ਮਰਗਟ ਕੌਰਵ ਸੇਨਾ ਜਾਨ ਕਿਮ
ਕਹਤੇਹੈਂ ਅਰਧੰਥਨ ਰਜਯਾਨ

ਕਬਿਤ੍ਤ

ਯਤ ਕੌਰਵਕੀ ਸੇਨਾ ਭੁਯੰ ਕਮਿਮ ਜਨ ਧੇਨਾ ਸਾਗਰ
ਭੁਯੰ ਵੈਨਾ ਸਭ ਸਾਂਤਕਰੈ ਜਾਯੇਹੈਂ ਨੂਰਯਕ ਸਾਮ
ਨ ਸਵਰਸ ਦੀਜਨਾ ਜਵਲਯਕਤੇ ਤਨਨਤ ਰਿਤਾਨ
ਮੁਵੇਤ ਭੁਤਨ ਸੈਂ ਜਾਯੇਹੈਂ ਗਾਕ ਕਯ ਭੁਲ ਕਮਿਮ
ਜੰਬੀ ਭੁਯ ਭੀਤ ਭੁਯੇ ਤਕਤ ਸਨੂਤ ਜਠੰ ਤਠੰ ਭੁਤ
ਨਯੇਹੈ ਨੂਰਹੈ ਸ਼ਾਂਮਜਾਸੈਂ ਵਨਸੈਂ ਸਾਂਗਰਭੁਤ
ਭੈਕ ਭੈਕ ਜੰਗਲਕੈਂ ਸੁਗ ਗਸ ਤਠਯਾਯੇਹੈਂ

संस्कृत वाहू प्रतिसोत्साहं

श्लोक

कांता रत्नति ह्यपधान विषये यद्बाहुलिभि र्धसरौ पां
चाली परिरंभ निर्भर रसा स्वादेपि यद्वंचितौ यत्कों
ता जनयोग्य दंतवलयै रावेष्टितो निस्रपं तद्बाहू
स्मरतं चिराय भरत तिष्ठंति मै वैरिण:

ਅਰਥ

ਭੁਜੰਗ ਤਤਸਤਰਕਰੈ ਕਹਤਾਹੈ ਯਤ ਸ਼ਾਹੂ ਜੈਤ

प वि.
नारी
२९

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

26

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नेपथ्ये श्लोक

धृत धनु रिव दर्पः साहसस्येव मूर्तिः सपटु रिव
रसोयं विग्रही वीरनामा दधि रिव जयलक्ष्मी स
न्निधो चापवल्ली मगाणीत ऊरुराजः कोयमेकोभ्युपै
ति ॥

[illegible]

[illegible]

𑆥 𑆮𑆴
𑆤𑆳𑆜𑆵
𑇒𑇒

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆑𑆮𑆴𑆠𑇀𑆠

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] 𑇑

𑆢𑆾𑆲𑆳

[illegible]
[illegible]

दुय: लडकन्ते विज़र य: तैम्य वैरन्ते लड.
लेढस्तय कुनर तेम्यने तुरने छुनिलय
दउ कुवन्ते तनर य: लडल्य ते वैर छुनि
लय वैनन्ते य: ज़िमरी उरवीर यल लय
ते ढ्य नतिरवे पुरवन्य दउ नुगने य: ते
वैर गै जरुबनरव

संस्कृत

उभो: स्वागत: कुमार: प्राग्रध्मान् कस्येद मुदारं व
चनं नायक: आत्म प्रथम गुरो: शारहतस्य

परिय

वैरं पुनते त्रुये कुलर वउउत्रुय ते लयुभर
ने विज़ पुरभर ढ्य उब्नरवरयते नयरव
उउत्रुय उमने पुरयन गुर ष्ठानमुरउ नीम ए
कयते

दूयव

वउ लरज़नने ते य: शोर लढगन् गुरू नेर
कुरम्मारय पुरढन्

संस्कृत पुन नैपथ्ये

श्लोक वंदा हवा राधित शूलपाणि: सपांडव खांडव
तर्पितास्नि: ज्याघातजात: किण सन्निवेश: करहये

य वि
ना॰ टी
२८

यस्य परस्य भ्रंसः

श्लोक

गलित निखिलशास्त्रं वाङ्मात्रा वशेषं द्विगुणित न
र रागं यं निरीक्ष्य स्मरारिः विहित कपट रूपः साहसा
क्लिष्टचेताः नयन मभि ललाटं दर्शयामास सद्यः ॥

ਅਰਥ

ਕ੍ਰੋਧਕ੍ਰਦਾ ਤਰ ਸੁਕ੍ਰਯ ਵਿਸੇ ਪ੍ਰਵਰਤਨ ਕਰਦੇ ਜਤਾਂ
ਕੌਰਵੀ ਸ਼ਿਵਜੀ ਜਿਸਨੇ ਸੌਰ ਜੇ ਸਾਰਤ੍ਰਨ ਜਿਸਨੇ
ਸੰਕਰ ਤਾਂਨ ਹੈ ਵਨ ਤਿਸਨੂੰ ਕਮਯਰਕਵੇ ਪ੍ਰਵਰਤਨ
ਨ ਕ੍ਰਦੇ ਸਗਾਕ੍ਰਿ ਕੌਰਤਾਂ ਸੌਰ ਜਿਸ ਪਰਨ ਪ੍ਰਰੁਸ
ਕੇ ਕੈਂਨੇ ਤਾਂਥੋਂ ਵਿਸੇਂ ਤਯਾ ਹੈ ਧਨੁਸਕਾਂ ਧਿਲ੍ਹਨਾਂ ਤਿਸ
ਨੂੰ ਧਾਤਕਰਕੇ ਨਿਤ੍ਰ ਵਿਤ੍ਰਸ ਤੋਂ ਤਨਕੇ ਸੌਰ ਕੀ ਕ
ਤੇਤੇ ਤਯਾਗਵਿਯਤੇ ਕੰਪ੍ਰਤਾਂ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰ ਜਿਸਨੇ ਤੌਰ
ਕੇਵਲ ਤ੍ਰਜਾਂ ਕਤੀਤੇ ਸ਼ੋਸ ਜਿਸਕੀ ਸੌਰ ਕ੍ਰਿਤ੍ਰਾਂ
ਕਰੀਤੇ ਪਰੀਤਿ ਜਿਸਨੇ ਤੌਰ ਸਾਯਾਂ ਕੂਰਕੇ ਧਾਰਾਂ
ਕਿਯਤੇ ਤ੍ਰਿਲਕਯਾ ਦੇਸ ਜਿਨੈਂਨੇ ਤੌਰ ਤਤਸਾਤਕ
ਨਕੇ ਤਰੇ ਸਾਗਸਾਂ ਨਿਤ੍ਰ ਜਿਨਕੇ ਧੋਕੇ ਜਤਕੌਰ
ਸੋਕੇ ਸਾਨ੍ਹੁਨਕੇ ਕੌਸਕੇ ਸ਼ੀਘ੍ਰਤੀ ਤੀਸਰੇ ਨੇਤ੍ਰ
ਕੇ ਵਿਖਾਂਤੇਤਯੇ ॥

28

𑆩𑆁𑆠𑇀𑆫

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆑𑆮𑆴𑆠𑇀𑆠

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆱𑆮𑆽𑆪𑆳

[illegible]
[illegible]
[illegible]

प वि. नारी २५

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
29 [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत वाक्य एवाय मर्जुनः तथाही

श्लोक ॥

हे लोलंघित वारिधि जनकजा विश्लेष पुष्यं मनः

कौसल्या सुत दैन्य पान सुपटु ग्रस्तांशु मन्मंडल: नि
र्दग्धा खिल राक्षसेश्वर पुर: सौमित्रि संजीवन प्रोत्खा
तौषधि पर्वतोस्य मरुत: पुत्रो ध्वजो वर्तते

ਅਰਥ

ਫਿਰ ਕਿਆ ਹੈ ਲੀਲਾ ਕਰਕੇ ਲੰਘਨ ਕਰ ਦੀਆ ਹੈ ਦ
ਧਿ ਸਮੁਦ੍ਰ ਜਿਨ ਨੇ ਔਰ ਸੀਤਾ ਕੋ ਦਿਖਾਲੀਆ
ਤਿਸ ਕਰਕੇ ਸ੍ਵਸੁਰ ਕਨ੍ਯਾ ਹੈ ਜਨਕ ਜਿਸਕਾ ਔਰ ਕੌਸ
ਲ੍ਯਾ ਸੁਤ ਜੋ ਰਾਮਚੰਦ੍ਰ ਤਿਨਕੀ ਦੈਨ੍ਯਤਾ ਕੋ ਦੂਰ
ਕਰਨੇ ਬਿਖੇ ਪਟੁ ਹੈਂ ਔਰ ਗ੍ਰਸਨੇ ਕੀ ਹੈ ਤਰੁਣਾ
ਸੂਰਯ ਬਿੰਬ ਕੋ ਬਿੰਬ ਫਲ ਜਾਨ ਕਰਕੇ ਗ੍ਰਸਨ ਕਰਲੀ
ਯਾ ਔਰ ਅਖਿਲ ਰਾਖਸੇਸ਼੍ਵਰ ਕੇ ਅਭਿਮਾਨੀ ਰਾਵ
ਣ ਤਿਸਕੀ ਪੁਰੀ ਜੋ ਲੰਕਾ ਸੋ ਦਗਧ ਕਰ ਦੀਆ ਔਰ
ਲਛਮਣ ਜੀ ਕੇ ਪ੍ਰਾਣੋਂ ਕੀ ਰਛਾ ਕਰਨੇ ਵਾਸਤੇ ਔਖਧੀ
ਪਰਬਤ ਹੈ ਦ੍ਰੋਣਾਚਲ ਤਿਸਕੋ ਉਖਾੜਕੇ ਉਠਾ ਲ੍ਯਾ
ਤੇ ਐਸੇ ਗੁਣੋਂ ਵਾਲੇ ਹਨੂਮਾਨ ਜਿਨਕੀ ਧਜਾ ਬਿਖੇ
ਵਰਤਮਾਨ ਹੈਂ

ਕਬਿੱਤ

ਲੀਲਾ ਕਰ ਲੰਘਨ ਕਿਯੋ ਦਧਿ ਸਮੁਦ੍ਰ ਜਾਨਕੀ ਸੀਤਾ ਕੇ

प वि
नाडी.
३०

दिशालेशा भोग घ्रा अवगमद्रदवैते वैवल श्रुत दगनं
कर तिनवी सैवैनयपते उवे कूरवरदैवे पतुरप
लवैते सरगतेती तरूपर कूरहु दिदठल सार
वीसे गुप पार तिर कोप वगपावैते

कौतम

लहुमर सीवे परारवे वश्वरवरसार सतुम
क तौमयमडित कवैरमल किवै पार पेस गु
रपले वली दयूपुत्र वतापें कौऽ उपवी धसानें
दवतार ठतपें

दयत्

धसापर उमवि दैवते दः ततुमेत किया मेवांवे कि
मवेकनमें भुमगेत लिया कूरसवे मूंत में दल
परमें श्रासामते मगर किमवी समरमें क
द लाववे लश्वमरसीवी सावर मेपाया वैत
कौ उवकनतमवर सी रघुनाथजीवा तैयः नें
वर गयते ठंव पवकनमें मर्गवर दताव
र वयें रतै पलठ तदते किमीस वेरः सै उमर
क्रियते ॥

30

संस्कृत

उभौ शृण्वतः कुमारः श्रावयामास श्लोक
कृतवीर रसोद्रेकः वैदरभा गर्भितैः पदैः
त्वयि श्रुत्र यवात्यर्थं पक्षपातं वनक्तिकः ॥

ਪਦਾਰਥ

ਦੋਨੋ ਸੁਣਤੇ ਹੁਏ ਕੁਮਾਰ ਕਰਤਾਂ ਤੇ ਤੇ ਸਾਗ੍ਰਸਮਾਣ
ਨੇ ਸੋ ਗਅਕਰਤੀਪ ਦਯਾਨ ਤਿਨਕਰਕੇ ਤਤ੍ਗਨਨਭੁਯਾ
ਹੈ ਦੀਰ ਰਸ ਤਸਕਰਕੇ ਤੇਪੁਣ ਤੇਰਾ ਗਙ੍ਪਾਤ ਕਰਣ
ਹੈ ਸਤਿਸ਼ਯਕਰਕੇ ਹੂੰਨਸਾ ਕਰਤੇ ਹੈਂ ਸਮਰਥਤੇ

ਅੰਤਰ

ਧ ਦੋਨੋਂ ਸੁਣਤੇ ਹੁਏ ਕੁਮਾਰ ਸੁ ਸਾਗ੍ਰਸਮਾਨ ਤਬ
ਕੁਮਾਰ ਫਿਰ ਕਰਤ ਤਹ੍ਯੈ ਸਾਗ੍ਰਸਮਾਨ ਹੈ ਸਾਨ

ਕਥਨੀ

ਅਹੰਗਤ ਹੈ ਦੇਅਰਤਿ ਤਿਸਕੀ ਗੌਰਦਤਾਂ ਜਾਨੇ ਜਾਨ
ਨਦਾਲੇ ਗਅਜਾਕੇ ਸੰਚ੍ਹ ਦਯਾਨ ਧੇ ਮਾਨੇ ਕ੍ਰਿਸਕਰ
ਕੇ ਤਤ੍ਗਨ੍ਨ ਭੁਯਾ ਧੈ ਦੀਰਾਂਦੈ ਰਸ ਤਸਕਰਕੇ
ਕਰਤ ਸਤਤੀ ਤੇਰਾ ਕੰਦ ਰਸ ਤੇਜ ਰਸ ਗਙ੍ਪਾਤ ਤੇਰੈ

प वि
ना टी
३१

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

नायकः कुमारः किमित्युच्यते पुत्र इवेति नत्रु पुत्रएवा
ह माचार्य्यस्य नेपथ्ये श्लोक॥
तूर्णं कर्णं धनुर्गृहाण समरे शारद्वत स्त्वग्रणी भीरद्वा
ज भूरुद्वहा दधिगता न्यस्त्राणि सं शिक्षय द्रोणेन द्व
यकौरव क्षितिपतिं पुत्र स्तथा शांतनोः संधत्ते सम
रोचितं पुर रिपोः शिष्याय मास्त्रवतः १ नायकः
सा नंदनं सोरयं कुरुराजा सेनायां सन्नाह यतियोधा
न्॥

[illegible]

31

उनकरी है दिखाय सागर समसैकी तिसका सम

रूपकर तै समुद्रदुधाज कैरवनका शाह है युर

पैधर तूं पूरसत्रुकर औैर मांतरुके पुत है श्री।

भगपित गऊं कै माउरके पैगाय है करना तूं

कल कै धारू करतेतैं औैर पुर विपु है गडके

र गिदनी तिसका शिवुय मारनुर कै मागरदिमैं

गथितैं ध्यर मारुल गडित करतातैं कै यत

कुरपैधर भैका दिमे है थागरैं तमपैजार करतातै

दोहरा

ध्यर करत कुमार कै पुत करतरके दात

गुरू मायरनु है दके पेके दयार पुतात

कवित्त

जयपर गैडमरतै करू श्रीयर धनुम धार

सुकूधदिमैं शारकदत मगारूी मागे जातातै

कूरैँयारय जरमरानहीके है जउनकरी कै॥

मगर दिमयारा जिगरू करतातातै कैरकू

रै राजा कुरपैधज तूं पूरसत्र करकरतै मसायांगा

ध वि॰ 𑆎𑆁𑆫 𑆫𑆡𑆾𑆫 𑆤𑆡𑆵 𑆢𑆠𑆠𑆾𑆁 𑆱𑆁𑆠𑆫𑆾 𑆥𑆶𑆠𑆲𑆼𑆠𑆾𑆁 𑆣𑆵𑆩𑆪

ना दी॰ 𑆓𑆴𑆠𑆳𑆓𑆠 𑆲𑆷𑆫𑆼𑆠 𑆱𑆶𑆮𑆶𑆣 𑆪𑆼𑆓𑆪 𑆑𑆫𑆢𑆪 𑆱𑆶𑆁𑆑𑆬

३२ 𑆣𑆳𑆫𑆠𑆾

𑆩𑆁𑆠𑆿

𑆎𑆁𑆫 𑆢𑆴𑆓𑆫 𑆢𑆴𑆓 𑆯𑆳𑆁𑆠𑆶 𑆲𑆁 𑆢𑆴𑆤𑆫 𑆯𑆴𑆩𑆪 𑆥𑆶𑆱𑆳𑆤

𑆱𑆓𑆫𑆠𑆳𑆓 𑆱𑆷𑆫𑆼 𑆢𑆴𑆱𑆼𑆁 𑆥𑆼𑆁 𑆱𑆫𑆲𑆶𑆤 𑆱𑆳𑆡𑆴𑆠𑆳𑆤

𑆤𑆪𑆫 𑆑𑆠𑆠 𑆱𑆫𑆁𑆩𑆼𑆁 𑆪𑆠 𑆱𑆶𑆠𑆫𑆤 𑆱𑆶𑆥𑆳𑆫 𑆮𑆼𑆤

𑆤𑆼𑆁 𑆪𑆴 𑆣𑆳𑆫𑆼 𑆠𑆑𑆾𑆪𑆼𑆠𑆤 𑆑𑆫𑆠𑆳𑆫

संस्कृत

देवसा रथिना परबलयोधाः स्वरूपेतो वीर्यतस्य ज्ञाता।
व्याः नायकः पञ्चेपने भुजग धजा वेदित कौटिल्यं

𑆢𑆪𑆠

𑆪𑆂 𑆱𑆶𑆫𑆑𑆫 𑆢𑆼𑆬 𑆠𑆤𑆢𑆂 𑆲𑆵𑆓𑆼𑆁 𑆲𑆁𑆓 𑆱𑆫𑆥𑆳 𑆢𑆪𑆂

𑆓𑆫𑆑 𑆠𑆶𑆓𑆼𑆁 𑆠𑆾 𑆑𑆾𑆓 𑆑𑆠𑆾𑆁 𑆪𑆂 𑆱𑆫𑆼 𑆱𑆳𑆫𑆪

𑆲𑆵 𑆱𑆠𑆢𑆤 𑆤𑆡𑆵𑆁 𑆑𑆶𑆱𑆪𑆳𑆼𑆁 𑆃𑆤 𑆱𑆳𑆱𑆷𑆱𑆫 𑆱𑆳𑆲

𑆢𑆓𑆼 𑆱𑆳𑆠𑆴𑆫 𑆲𑆶𑆓 𑆲𑆳𑆁𑆠𑆴 𑆱𑆶𑆑𑆢𑆶 𑆢𑆓𑆪 𑆱𑆢𑆳𑆠𑆴

𑆯𑆳𑆠𑆾 𑆱𑆳𑆠 𑆥𑆼𑆡 𑆓𑆼𑆑𑆳𑆫 𑆓𑆴𑆠𑆼𑆁𑆓𑆴𑆂 𑆱𑆢𑆫𑆼 𑆱𑆳𑆓𑆠𑆾𑆁

𑆢𑆂𑆱𑆳𑆠 𑆃𑆑𑆼 𑆱𑆳𑆫𑆲𑆪 𑆱𑆓𑆓𑆶 𑆱𑆢 𑆑𑆴𑆪𑆳𑆠 𑆱

𑆲𑆳𑆁 𑆓𑆱𑆠𑆾 𑆑𑆫 𑆲𑆁 𑆢𑆼𑆑𑆳𑆠𑆾𑆁 𑆥𑆼𑆁𑆫 𑆑𑆴𑆪𑆳𑆠 𑆱𑆳𑆓

[illegible]

श्लोक

यस्येयं तु वसुधा कलह प्रथमांकुरस्य सौजन्य गंध
मपि यस्य न वेत्ति चेतः आ जन्मनो विष जलाग्नि
शुद्धे कृपाये रसि त्रिकार निरतः कुर राज एषः
कुमारः कोऽयं ततो दक्षिणतः नायकः सार्थयम्

मरथ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆥 𑆮𑆴
𑆤𑆳 𑆝𑆵
𑇓𑇓

𑆥𑆶𑆫𑆱𑇀𑆠𑆳𑆢𑇀𑆮𑆼𑆢𑆼𑆂 𑆑𑆬𑆯𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼

𑆩𑆟𑇀𑆝𑆥𑆁

[illegible]

𑆑𑆫𑇀𑆟𑆴𑆑𑆳

[illegible]

𑆢𑆪𑆳𑆠

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक

रोषोत्कर्ष कषायतो ल्वण दृशो ऽप्यग्रे हि डिम्ब द्विषः
पांचाली हृदय स्थलात् सरभसं लज्जा डकूलां चलः
निर्मोकः फणिन स्तनो रिव बला येनावकृष्टः पुरा
सोयं साहसिकाग्रणी क्षत्र रथे डुःशासन स्तिष्ठति

पाठ

प वि. नाडी. ३४ अतिशायरूपधराय नमस्ते तत्रभवते जितकं ते

र विकेंद्र रङ्गमरे भरते दाले दलीभीगगेन त्रि

वे भगवते अरविन्दीवे कृष्णाय नते दलाद्व वरत्र

वे नमः नय कुरुलं बल हे गतवते दाले दशर

त्रिरूवे है नरव वेमरी नृपः तत्र तत्र तुप हे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अन्वय ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पुनः संस्कृत

कुमारः किमतः परं साहसं नायकः इतः पद्मस
प्रणामम श्रुति फलैति रवि प्रभावितानः स्फुरदुर
कांचन वेदि सूचितेज्यः दधतुपनिषदः श्रियं समया
प्रथित यशा गुरुरेष कौरवाणाम्

पारथ

[illegible]

ब वि. [illegible]
ना टी. [illegible]
३५ [illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

35 [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत ऊमारः

महानुभावः स्वल्पेषु लक्ष्यते नायकः इतः प्रभृ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्लोक

योयं ललाट तट मंडित चंद्र चूडः सं लक्ष्यते स्वय
मिव त्रिपुर प्रमाथी मूर्तोस्त वेद इव तुर्विबद्धः
परेषां प्रश्नो गुरोः प्रन रयं दयितः सखा मे ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प.वि. ना.टी ३९ [illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत ऊमारः पुन रावेदयत् नायकः

श्लोक

योनोच्चै र्ध्वज मिषतः कलशा इवा रोपितो धत्रवेंदः
कनक मंडल मंडित रथ वेश्मा भाति गुरु रेषः ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ध वि॰
ना टी॰
३७

संस्कृत कुमारः कोप्तुं कुरु राज सन्निधौ
समरार्थीव दृश्यते नायकः सामर्षम्

श्लोक मूले सुयोधन हता खिल दुर्नयानां यद्दो
दीलं भृगुकुलोद्वह मूढशिष्यः सोऽयं प्रसन्न बल
सूदन दत्तशक्तिः सूतात्मजो निजकुलात्र चिता
भिमानः ॥

[illegible]

37

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ध वि·
नाटी·
३०

संस्कृत

ऊमारः सोपहासम् नन्वेष घोषयात्रायां विदित
प्रभावः कपिध्वजः नायकः स युष्माकम् अस्मांगर
ना परिहृत्य प्रणयेन कीर्त्येवा लिंगितो धवलया प
लितच्छलेन दृष्टा इव प्रकट निर्जित जामदग्न्यो देव
व्रतः पृथुयशाः स पिता महोनः

ਸਾਰਥ

ਕੁਮਾਰ ਤੁਸਾਡਾ ਆਪਣਾ ਵਡਾ ਤਾਂ ਦਿਗਵਿਜੈ ਕਰ
ਕੇ ਵਡਤੇ ... [illegible] ... ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਕਿਸੇ ਨੇ ਨਾਂ
ਤੇ ਕ੍ਰਿਪਾ ... [illegible] ... ਵਡਤੇ ਹੈ
[illegible] ਪਰਿਤ੍ਯਾਗ ਕਰਕੇ ... [illegible] ... ਕੀਰਤਿ ਜਿਸਨੇ
[illegible] ਚਿੱਟੇ ਵਾਲਾਂ ਦੇ ਬਹਾਨੇ ਨਾਲ ਲਿੰਗਨ ਕੀਤਾ ਹੋਇਆ ਹੈ
[illegible] ਪ੍ਰਗਟ ਜਿੱਤਿਆ ਹੈ
[illegible] ਦੇਵਵ੍ਰਤ ... [illegible] ... ਵਡੇ ਜਸ ਵਾਲਾ
ਪਿਤਾਮਾ ਭੀਸ਼ਮ ਜੀ ਹੈ

ਛੰਤ

ਕੁਮਾਰ ਵਡਾ ਤੁਸਾਡਾ ਪਰਾਕ੍ਰਮ ... [illegible] ... ਦਿਗਵਿਜੈ [illegible]
ਸਹੀ ਭੀਸ਼ਮ ਪਿਤਾਮਾ ਜਿਸ ਨੇ ... [illegible] ... ਗੁਰੂ ... [illegible]

38

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

श्लोक

सूतः त्वरय त्वरय त्वरगान् ने पथ्य

प वि नाटी. ३५ वैमानिका इमे व्योम्नि समरालोकनोत्सुकाः वाङ्सा
र मिदानीं त्वं प्रदर्शीय धनंजय

पारथ

[illegible]

39

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

ततः प्रविशति विद्याधर सहित इंद्रः प्रतीहारीच इंद्रः साश्चर्यम् श्लोक वाक्कालहोऽपि गहनो बहुभिर्वलिनो विहीन सामर्थ्यैः किमुतानेकै र्वलिभिः क्रूरास्त्र निपात दारुणः समरः ॥

𑚡𑚭𑚧𑚭

𑚙𑚛 𑚀𑚫𑚛𑚤 𑚦𑚮𑚛𑚶𑚣𑚭𑚜𑚤𑚲𑚫 𑚨𑚩𑚮𑚙 𑚂𑚫𑚛𑚤 𑚞𑚶𑚤𑚙𑚯𑚩𑚭𑚤 𑚛𑚯 𑚞𑚤𑚦𑚲𑚧 𑚊𑚤𑚛𑚲 𑚩𑚴𑚣𑚲 𑚂𑚫𑚛𑚤 𑚨𑚭𑚧𑚭𑚣𑚤𑚣𑚤𑚊𑚤𑚲 𑚊𑚩𑚙𑚭 𑚩𑚲 𑚨𑚭𑚢𑚤𑚜 𑚩𑚯𑚝 𑚩𑚲 𑚛𑚰𑚙 𑚦𑚥𑚯 𑚙𑚮𑚝𑚲𑚫 𑚦𑚥𑚯𑚤𑚊𑚤𑚲 𑚛𑚯 𑚊𑚩𑚙𑚭 𑚊𑚮𑚝𑚲 𑚀𑚵𑚤 𑚛𑚲 𑚙𑚤𑚊 𑚊𑚤𑚲 𑚊𑚩𑚙𑚭 𑚨𑚭𑚝𑚲𑚤 𑚛𑚯 𑚛𑚥𑚭𑚝𑚲𑚫 𑚞𑚤𑚫𑚙𑚰 𑚙𑚮𑚝𑚲𑚫𑚊𑚤𑚲 𑚊𑚣𑚭 𑚩𑚴𑚙𑚲 𑚑𑚮𑚨 𑚊𑚶𑚤𑚥𑚣𑚲𑚫 𑚊𑚶𑚤𑚥 𑚩𑚲 𑚧𑚨𑚙𑚶𑚤 𑚨𑚨 𑚛𑚮 𑚙𑚮𑚝𑚲 𑚞𑚶𑚤𑚙𑚭𑚤 𑚊𑚤𑚲 𑚡𑚣𑚭𑚝𑚊 𑚨𑚢𑚤𑚩𑚲

𑚀𑚙𑚭

𑚙𑚛 𑚀𑚫𑚛𑚤 𑚦𑚮𑚛𑚶𑚣𑚭𑚜𑚤𑚲𑚫 𑚨𑚩𑚮𑚙 𑚊𑚤𑚙 𑚞𑚤𑚦𑚲𑚧 𑚂𑚫𑚛𑚤 𑚞𑚤𑚙𑚯𑚩𑚭𑚤 𑚛𑚯 𑚨𑚩𑚮𑚙 𑚀𑚶𑚙𑚭𑚤 𑚨𑚤𑚑 𑚡𑚣𑚲 𑚡𑚱𑚨

𑚡𑚭𑚧𑚭

𑚨𑚭𑚢𑚤𑚜 𑚩𑚯𑚝 𑚩𑚲 𑚛𑚰𑚙 𑚊𑚤𑚊𑚲 𑚙𑚮𑚝𑚲 𑚣𑚛𑚯 𑚑𑚭𑚫𑚛𑚲 𑚛𑚭𑚥𑚮𑚙𑚲 𑚊𑚤𑚊𑚲 𑚊𑚤𑚝 𑚊𑚤𑚙𑚝 𑚑𑚭𑚫𑚛𑚯 𑚣𑚙𑚲 𑚀𑚭𑚝𑚲 𑚙𑚮𑚤

ध वि॰
ना टी॰
ध॰

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

40

संस्कृत पुनः विस्मयं श्लोक

एको रथी प्रति रथास्त निरस्त संख्याः कर्णादयः स्वचि
र राज्यमदेन दृप्ताः वत्स त्वया प्यह हनि ग्रहणं प्रवि
ष्टः सत्वं हि नोर्जित तरं विमृश्य त्वपायम्

अर्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

कुमारः पुरो वलोक्य देव कुरु पति रेवा गच्छति
नायकः पूर्णा स्तर्हि मनोरथाः ततः प्रविशति
रथारूढो दुर्योधनः नायकं विलोक्य सामर्षम्

𑆥𑆳𑆫𑇀𑆡

धवि
नाटी·
पर

𑆑𑆶𑆥𑆳𑆫𑆑𑆠𑆠𑆽 𑆥𑆫𑆤𑆶𑆩 𑆩𑆾𑆑𑆫𑆫𑆑𑆼 𑆠𑆩𑆼𑆢 𑆑𑆶
𑆑𑆷𑆪𑆠 𑆑𑆶𑆫𑆪𑆵𑆥𑆫𑆠𑆵 𑆥𑆳𑆢𑆠𑆠𑆽 𑆥𑆫 𑆠𑆪𑆼 𑆪𑆫𑆼𑆫
𑆥 𑆑𑆷𑆫𑆁𑆠𑆪𑆼𑆠𑆽𑆁 𑆠𑆩𑆫𑆼𑆠𑆫 𑆫𑆥𑆪 𑆥𑆳𑆑𑆷𑆩𑆠𑆼𑆥
𑆫𑆩𑆪𑆼 𑆥𑆳𑆢𑆠𑆠𑆽 𑆑𑆶𑆫𑆪𑆵𑆥𑆫 𑆤𑆥𑆫𑆑𑆼𑆁 𑆩𑆾𑆪𑆑𑆼
𑆑𑆷𑆫𑆼𑆥𑆫𑆫𑆑𑆼 𑆑𑆠𑆠𑆽 𑆩𑆽𑆠𑆫𑇀
𑆥𑆫𑆤𑆶𑆩 𑆩𑆾𑆩 𑆑𑆶𑆥𑆳𑆫𑆪𑆁 𑆑𑆠𑆠𑆽 𑆠𑆩𑆼𑆢 𑆑𑆶𑆫𑆶𑆪
𑆠𑆴𑆑𑆶𑆫𑆪𑆵𑆥𑆫 𑆪𑆠𑆽 𑆥𑆳𑆢𑆠𑆳𑆫𑆼 𑆥𑆢 𑆤𑆥𑆫 𑆑𑆠
𑆠𑆁 𑆥𑆳𑆢 𑆪𑆼𑆫𑆼 𑆪𑆫𑆼𑆫𑆥 𑆑𑆷𑆫𑆼𑆠𑆼𑆥 𑆠𑆩𑆫𑆼𑆠𑆫 𑆥𑆳𑆑𑆷𑆫
𑆑𑆠𑆼𑆑𑆶𑆫𑆪𑆵𑆥𑆫 𑆥𑆳𑆠𑆼𑆥 𑆩𑆽𑆠𑆫𑇀 𑆤𑆥𑆫𑆑𑆼𑆪
𑆫𑆠𑆴𑆩𑆾𑆪𑆑𑆼 𑆑𑆶𑆫𑆪𑆵𑆥𑆫𑆤𑆼 𑆥𑆳𑆤 𑆑𑆷𑆫𑆼𑆪 𑆮𑆴𑆪𑆼𑆪𑆁 𑆫
𑆠𑆠𑆽 𑆥𑆩𑆼 𑆪𑆤𑆪𑆼𑆁 𑆤𑆳𑆤 𑆢𑆪𑆲
𑆮𑆁𑆢𑆫𑆤𑆼 𑆩𑆾𑆩 𑆑𑆶𑆫𑆪𑆵 𑆥𑆫𑆑𑆼 𑆥𑆳𑆠𑆼 𑆑𑆠𑆁 𑆥𑆳𑆫𑇀𑆑𑆶𑆤 𑆪𑆼
𑆑𑆶𑆯𑆳𑆥𑆤𑆑𑆼 𑆑𑆶𑆤𑆑𑆼 𑆮𑆴𑆤𑆼 𑆥𑆳𑆑𑆶𑆤 𑆢𑆫 𑆥𑆳𑆪𑆁 𑆠
𑆤 𑆪𑆠𑆩𑆫 𑆠𑆼𑆫 𑆠𑆁𑆪𑆵𑆁 𑆪𑆼 𑆪𑆂 𑆢𑆪𑆠𑆠𑆽 𑆥𑆳𑆢𑆫𑆢
𑆪𑆂 𑆑𑆶𑆫𑆪𑆵𑆥𑆫𑆤𑆼 𑆑𑆶𑆤𑆑𑆫 𑆠𑆼𑆓𑆤𑆢 𑆤𑆫𑆷 𑆥𑆳𑆫𑆼𑆪𑆼
𑆩𑆁𑆑𑆠𑆁 𑆥𑆳𑆫𑇀𑆑𑆶𑆤𑆪𑆼 𑆢𑆼𑆢𑆷

श्लोक

बनवास परिक्लेशात् किं निर्विण्णोऽसि जीवने
यदभी रेक प्रवत्व मनेकै र्योद्धु मुद्यतः ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

ध वि.
नारी.
धर

ढेरि देखिल् गरेल कूयँ ढुग गरे गुरु
दिल्

संस्कृत नायकः सोपहासं

श्लोक एको निवात कवचान् सहकालकेयै र्भस्मी
चकार भगिनी महरञ्च शौरेः एको न खाण्डव वने
जुहवे ऽनलेच पार्थस्य नाभि नव एक रणेषु यस्याः

मर्थ

रयर उम ररदे रउडडे पवडीगें विदंउ र
दय गैर रलरेय गें ख्तेउय उिनरे भुगगररउ
भुय ढुँर मीरूम्ह्र गडरन जीरी डगिनी गें
गुडव्वरे उिमरे गें उरउभुय यगुर पर दें
हररे ठरमूरदे भंक्वर दनरें गगतिदिमें
उदन ररखउभुय गर्ह्युन गडिगन ररदे रउ
उडै उँब्युरयंधर ठम रहभुमी दिमें गेरदे
ददीर गरगनडीं

बेंडर

देग उरभड भुपी रयर उर गर गंउ उमर
ददे रउरे लगे ख्तरेयधन गुर दंउ

उदिउउ

उिदंउ ददय गर ढुँर वालडूर ख्तेउय गरप

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत दुर्योधनः

छल मेतै रूपहासैः उपस्थितो निकषो पलोपमः सं
ग्रामः नायकः सहासम्   श्लोक
अपसर कुरुनाथ हृत मत्या दृष्टांत द्रुपद नृपति पुत्री

ध वि
ना टी.
धत्र

यत्र दासी कृतासीत् इह हि शार शालाका पात सर्वं सगर्वं प्रति नृपति पुराराते: लतिय द्यूत केलिः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] संस्कृत दुर्योधनः सामर्षम्

श्लोक

करिवदन वलय भूषित कर श्चिरत्यक्त कार्मुका भ्या
सः नर्तनशालां प्रविष्टा प्रवीर पुरुषो विनोदि
संग्रामः ॥

अर्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥

44

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत कुमारः

सोल्लुण्ठनं शौर्येण चिर परि त्यक्त कार्मुकाभ्यास
इत्यभि धत्ते तद्युक्तम् ॥

श्लोक संक्रन्दन प्रहित खेचर वर्ग वध प्रमत्त कृपा
कुल निजाग्रज शासनेन भीमार्जुनेन विहिता शर
पंजरस्थो निर्लोकितासि भवता नृप विह्वलेन

प वि.
ना टी.
५५

संस्कृत विद्याधरः देव प्रौढः ब्रिलेष वत्सः इन्द्रः रा
जपुत्रोऽध्यायम्

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

दुर्योधनः सूत अलं विप्र जनो चित वाक् कलहेन
विषमेयं भूमिः रथ संचारो चितं भव मवृतराम ना

ध वि ना ती ४६

यकः यदमि रुचितं ऊरुपतयेऽइति निष्क्रांतो

[illegible]

[illegible]

[illegible]

46

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ਰਥ ਨੂੰ ਦਸੀਂ ਕਰ — संस्कृत विद्याधरः

नायक रथं निर्दिश्य देव ॥ श्लोक
त्वन्नन्दन स्यंदन वाजि राजि खुर क्षत क्ष्मारजः प-
ताकाः विपक्ष वक्षो रुशि मथनोस्य प्रताप वह्नेरि
व धूम लेखाः ॥

ਅਰਥ

ਵਿਦ੍ਯਾਧਰ ਨਾਯਕਾਂ ਰਥ ਕੋਲ ਹੈ ਰਹਤਾ ਹੋਯਾ
ਹੇ ਇੰਦ੍ਰ ਤੇਰੇ ਪੁਤ੍ਰਦੇ ਰਥਦੇ ਘੋੜੇ ਤਿਨ੍ਹਾਂਦੀ ਪੰਕਤਿਆਂ
ਦੇ ਖੁਰਾਂ ਨੇ ਪੁੱਟੀ ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਉਤਪੰਨ ਹੋਈਆਂ ਧੂੜੀ
ਕੀਆਂ ਧ੍ਵਜਾਂ ਨੇ ਵੈਰੀਆਂ ਦਿਆਂ ਛਾਤੀਆਂ ਹੋਈਆਂ
ਕੋਪ ਸ਼ਤ੍ਰੂਆਂ ਨੇ ਦਵਾਗਨਿ ਨੇ ਹੋਈ ਸਾਰੀ ਦੂਯਾ ਸ
ਗਲ ਨਾਧਨ ਕਾਸ਼੍ਟ ਤਿਸਦੇ ਪ੍ਰਤਾਪ ਰੂਪੀ ਅਗਨਿ
ਨਾਲ ਹੋਈ ਹੈ ਪ੍ਰਤਾਪ ਰੂਪੀ ਤਿਸਦੀਆਂ ਹੈ ਧੂਮ
ਲੇਖਾ ਰੂਪ ਧੂਮ ਪੰਕਤਿਯਾਂ ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਤੁਲ੍ਯ ਹੈ ਸ਼ੋਭਦੀ
ਕੀਤੇ

ਕਵਿਤ

ਵਿਦ੍ਯਾਧਰ ਨਾਯਕਾਂ ਰਥ ਕੋਲ ਰਹਤਾ ਹੈ ਹੇ ਇੰਦ੍ਰ
ਤੇਰੇ ਪੁਤ੍ਰਦੇ ਰਥਦੇ ਤੇ ਘੋੜਿਆਂ ਤਿਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੈ ਪੰਕਤਿ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

47

संस्कृत

इंद्र: भट महाकवि रसि विद्याधर: देव निकटगते
किरीटिनि प्रहत: कोलाहल: ऊर्द्धणाम् तथाहि
श्लोक द्रुषा वोषै ईरीणां जित वन निनदै हिंस्तैः कं
जराणां ज्या घातोत्थै र्निनादैः पटु पट हरवै र्मर्दला
द्दामशद्दैः शाभैः कोणपि कंठं मद गज निवह स्कंध
घंटा प्रणादैः शृंगाराय त्वरंते त्रिदशा मृगदृशो वीरा।

वगीतरक्ताः

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

ध वि.
ना टी.
४८

48

संस्कृत

पुती देषणए कोलाहल मेतं जसां विपडंते जरू वलं पंचहि अतस्स तह उत्तस्स अहि महं पवलिदम् देव येकव आकण्णा कहि अकटिए फग्गुणको दंडम् तणीस्सरत्त सरणि अरे॰ हे क॰ विवणिडद गताओके विभग्गा को दंडाओके वि पसुडिद सीसकाओके विणि भिण्णेण ताओके वि भग्ग भुजाओ के वि विकद्वदब कण्यलाओ जरूवली भटादी संति

अर्थ

ਪਰਤੀਤਾਂਰੀ ਰਣੈ ਔਰ ਕੋਹਲ ਕੋਲਾਹਲ ਮਤ ਨਦੀ ਹੈ ਸੁਲਖਪਣੀ ਪਰਦੂਤ ਔਰ ਵੈਰ ਦੇਂਦੀ ਸੇਨਾ ਦੇ ਮਨ ਸੁਖ ਗਜਨ ਰਵਤਾਂ ਹੈ ਤੇਰਾ ਪੁਤ ਤਿਸਨੂ ਕੋਖ ਔਰ ਰਣ— ਪਰੀਤ ਲੋਂਗਦੇ ਰਣੈਰ ਸੈ ਭੁਜਕਾਂਡ ਮਹਿਤ ਦੇ ਤਿਸਨੇ ਜਿਰਲੇ ਸੈ ਦ—ਦੇ ਮਨਾਤ ਤਿਸੇਂ ਰਵਦੇ ਲੋਕ ਲੋਕ ਤੇਕੋਤ ਸ਼ਿਰਦੇ ਤੌਰ ਕਿਤਨੇ ਭੁਗਨਰੈ ਕੌਰ ਕਰਦਲੇ ਤੌਰ ਕਿਤਨੇ ਭੁਗਨ ਭੁਜਾਂ ਦਾਲੇ ਤੌਰ ਕਿਤ ਸ਼ਿਰਦੇ ਤੌਰ ਕਿਤਨੇ ਨੇਤ੍ਰੀ ਤ ਔਰ ਕਿਤਨੇ ਦਲਪਥ ਲ ਰਹਿਤ ਹੋਕ ਪਰਵਾਰਦੇ ਵੈਰਦੇਂਦੀ ਸੇਨਾ ਵਿਸੇਂ ਧੈਧਾ ਕੋਖ ਪਕੜਤੇ ਹੈ ॥

49

[illegible]

[illegible]
[illegible]

संस्कृत

इन्द्रः महर्षि कृतहस्तः त्वष्टेष वत्सः विद्याधरः
देव पश्य पश्य ॥ श्लोक ॥

मुंचद्भि मदवारि वारण गणै र्मेघायितं कार्मुकैः
दैतैः शक्रशरासनायित मधच्छत्रैः शिलीध्रायिते
खद्योतायित मस्त्र घटन मसृ भूत स्फुलिंगैः स्फुरन्
नाराचै र्बलाकायितं रणभुवा सैन्यै र्नभस्यायितम्

भाषा ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

50

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

अपिच श्लोक

तत्रत्र मुक्त विशिखै रश्मानि प्रकाशे ताम्बूल लून न
वकेतक कांत दंताः ग्रासा वसन्त मदधार कपोल भा
गाः संपादयंति करिणः करणी भ्रमं नः ॥

अर्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ईद्दः सन्तोषम् श्लोक

हरांते वासिनस्तस्य कालकेयांतकस्य च यडनाथ सनाथस्य का स्लाघा कौरवै र्जितः ॥

अर्थ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत प्रतीहारी प्रेत्यस्वदेव ॥

श्लोक ॥

बाणा प्रलूण मदवारण ग्रंथि ग्रंथि नानाश्रशाभि श्रवद
न्न गभीर तंडा एषा प्रणार्तित करांगुलि कंठ दिग्धं र
क्तासवं पिबति कापि पिशाच कन्या ॥

पार्थ ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

ध वि
ना टी.
५२

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक

एते मत्त मतंगजाः प्रजविनः श्वासाकुला घोरणाः स्फा
र्तेश्वंद कि वर्द्ध भार कलितो दंडध्वज श्रेणयः शक्र त्व
त्कर वज्र पात चकित प्रभान्त पृथ्वी धराः वृन्द भ्रांति
मुदं च यंति नितरां त्वत्सत्र विद्राविताः

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

52

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

इन्द्रः सहर्षं पश्यति प्रतीहारी देव पेक्षव पेक्षव निरंतर

ध वि॰ ना टी॰ ५२

विक्षिप्त बाण निकुरम्ब परिक्षत गजनर रुधिरपान संतर्पि-
ताः साधुवादोत्तरं यातुधाने चोगिन्यो अभिनंदंति तव भ्र-
त्रस्य विजयम् इंद्रः स जय एव तर्हि सत्य आशिष्यहे वि-
द्याधरः विभाग देव ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]

संस्कृत

महद्युद्धं वर्तते प्रभूय प्रभूय   श्लोक ॥

वशषि भट करोटि न्यस्तकी लालसिंहं   द्विरद कर मृणा
लै योगिनीभि र्निपीय समर विजयिने यत्नाङ्ग श्रयम्प भू
यः प्रकटित परितोषं स्वस्तिवादोभिनेने

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अपिच स्लोक

भग्नभ्रूयुगलैः क्रुद्धा समधिकस्फारा रुणाक्षैः क्षणात् स्वेदा
म्भः पटलप्रमृष्ट तिलकै र्दंष्ट्रा धरोष्ठै रपि दष्टयुष्मद्भि रुग्र
तड़ि रभितः संकीर्ण मालायते त्वत् प्रत्याश निकृंत वैरि
सुभट श्रेणी शिरोभि र्वियत् ॥

54

अर्थ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

पुनः सविस्मय मालोक्य देव पश्य ॥

श्लोक कोप्येष वेष्टित शिरा विकसत्सुवेश्रीः प्रारब्ध तांडवविधिः सुरकामिनीभिः आलोक्यते निजकराभिनयात्तद्रूप मापादिते नाग निवेदित सत्वसारः ॥

पारथ

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत इन्द्रः सहर्षं किं किं पश्यामि दोलायितं मनः

श्लोक

मायाविभिः ऊरुबलैः सह युध्यमानं कुंती सुतं रण शि
रस्य सहायवीरम् ॥

55

अर्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक सापत्न्य सम्भ्रम कलिं सुरकामिनीनां तद्वैरि वीर वरणोत्थ

तथात्रव्यतं ॥

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

विद्याधरः एव मेतत् अन्यतो ऽवलोक्य देव पश्य पश्य ह्रात् प्रोत्सार्य्यमाण परस्पर निकर ज्वाल कीलाभि घात प्रप्रपहाज्जि वर्ग भ्रमण नियमन व्याकुल बभ्रूतः लेखि प्रोढो कृताशाः कृतलय समया शंकमाकाशवीथिं गंगास्तत्र प्रसक्त प्रथितकृतवहा स्नात्रभाव प्रसृतः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

56

संस्कृत

प्रतीहारी देवी अस्माणं विणि अउवती मआए ओ एसो अवदा
सणा विद्याधरः भद्रे माभैषीः किं नामेदं किरीटिनः प्रभूय प्रभूय

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्लोक

नीलैः कालाञ्जन निभतमैः स्तामलिप्तांतरिक्षे विद्युद्दाम द्युति
धवलिता शेषदिक चक्रवालैः धीर ध्वानैः कलभकनिभैः
स्थूलधाराः सृजद्भिः मेघै नीतः प्रलय मनलो वारुणास्त्र प्रसूतैः

अर्थ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

दयर

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥

संस्कृत

इन्द्रः महानुभावः एवल्वेष वत्सः प्रतीहारी देव सम्पदं राक्षस
देण भुजंग मस्यं यउतं आलालजी हज्ज प्रलं कराल मुहणी
सरन्न गरल धूमलेहा करम्बिद फणार श्रण किण माला विडं
बिद स्सरको अंडाश्रो विहलिदस प्रल पुहवी बल श्रा श्रो पेक्खण
मेत्तदग महामदी हहा प्रपसरंति सप्पाश्रो वियाधरः ॥

श्लोक

दीर्घैः सज्जन साम्यवन्मुकुलिते श्विनैः खलानामिव व्यालैर्यागि
जेने रिवाम्बरतल श्रीभे लस त्वल्लिकैः रत्ना ज्ञासिकरोज्वलेर्न्द
पतिवत् स्वर्गस्थवद्भोगिभिः राधयास्त भुजंगमास्वजनिते दि
क् चक्रमाक्रम्यते ॥ ॥

पार्थ

[illegible]
[illegible]

यो रावणेन भुजंगम सागर वेष्टितो येथ महामन्त्र म
हेशी योङ्गते कुलपर्वतस्य शिखरं विष्टारते यैर
कुम्भकर्णेन विष्णु हेम कुण्डलते यैर हेमीकृत शि
खरं गगनमें विरवते तेषांशी सागरस्थाने दुर्गाय
ते यैर कुण्डलाकारते सागर शिखरे तेर वरुणेन प्र
स्थापकस्य हेम वज्राक्ष परमस्थानेन तेषां गलि
यैर्वले तक्षकल परमस्थानते तेर हेमगर हेमगर
वले सर्वगिरिवासी हेमते तेषां हेमीते अस्य पारस
रले रावणेन भुजंगम सागरमें ततप्रवरतुर्य हेम
रूप से शिखरे मण्डलेन सागरमा वरते
अते गतरत्नाकर वल्ल यत वरुण अरूमरवत पत
विष्टपधर वतेन लगाते अर कुल लेत

व्याख्या

अस्य लविसे भुजंग सागर हेमये सार महामन्त्र
सागर कुलपय योङ्गतलं वक्षिये ताले मगार श्रीर
प विष्टारजान कुम्भवर्णे गितजेम कुण्डलाम म
गाविये वज्रादिमें दुर्गापूत कुण्डलाकार शिखरे सा
गरते वतेनरे परवराज्ञ मरवे हेमर कुलगिये गा
नार परवरशा हेम हेमाते येथ यत गलियैर
तक्षकल परमशातेत गाविये ॥

[illegible] ५८

[illegible]

[illegible]

58

[illegible]

संस्कृत

इंद्रः खांडव दाहे कृतवैराः किंदशंति सर्पाः विद्याधरः अलं
विवादेन अर्जुनेन प्रयुक्तं गारुड मस्त्रं पश्य पश्य
पक्षाघात निपात मारुत भरात् प्रोद्भिन्न पृथ्वी धरा स्कन्द्ध
दष्ट विशाल भोग भुजगाः सूर्योपि कंदस्पृशः संतोषं जनयंत्य
मी कुलगिरे लीलागतस्था सारथेः मन्ये वैरि नृप प्रमथन
विकस विक्रांतयः पक्षिणः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

59

संस्कृत

इन्द्रः सहर्षं ततस्ततः प्रतीहारी यसो संपदं उर्येधणा
सिद्धदेण दोणेण सुत्ता वारण वाणी तह उत्तस्स सउय
वलिदो विद्याधरः सम्यगवलोक्य प्रवृत्त वैनायक महं
पश्य पश्य

श्लोक

सिंदूरारुण मौलिभिः स्वदश्राम प्रोताम्बुद श्रेणिभि र्ली
लो दस्त कराग्र मारुत भर प्रोद्भूत तारागणैः पादाघात
चलत् कुल क्षितिधरैः संकीर्णं मालक्ष्यते हेरम्बास्त्र
विनिसृतै र्मदमुखैः स्तब्धैर मैरम्बरम् ॥

अर्थ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

60

संस्कृत

इंद्रः इतस्ततः विद्याधरः पार्थेन सिंहासनं प्रश्नकं पश्यप
श्य ॥

श्लोक

दंष्ट्रा ज्योतिः खचितगगनैः केसराटोपभीमैः फुल्लांगूलैः
क्षितिधर गुहा सज्वर हीरनादैः सिंहै दंतनखर शिखरोत्
खात कुंभस्थला स्रग धारा स्वाद वसन विवशैः क्वापि
नीता गजेंद्राः

अर्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑆢𑇀𑆫𑆶𑆥𑆢𑆠𑆤𑆪𑆼 𑆮𑆫𑇀𑆠𑆠𑆼 𑆓𑆁𑆨𑆵𑆫 𑆯𑆾𑆑𑆱𑇀𑆪 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆤𑆫 𑆠𑆼𑆫 𑆤𑆳𑆁
𑆢𑆼 𑆱𑆓𑆫𑆠𑆶𑆓 𑆑𑆫𑆢𑆼 𑆢𑆴𑆱𑆵 𑆑𑆫𑆼 𑆱𑆼 𑆓𑆁𑆨𑆵𑆫𑆥𑆤
𑆠𑆴𑆤𑇀𑆤 𑆥𑆤𑆵 𑆱𑆼 𑆪𑆶𑆣𑆴𑆱𑇀𑆡𑆵𑆫 𑆠𑆱𑆢𑆼 𑆯𑆶𑆑𑆫
𑆱𑆼 𑆢𑆪𑆱𑆤 𑆠𑆴𑆱 𑆑𑆫𑆢𑆼 𑆢𑆼 𑆢𑆱𑆠𑆼𑆪 𑆱𑆼 𑆯𑆾𑆫 𑆠𑆳𑆣𑆴𑆪𑆼𑆁
𑆢𑆼 𑆑𑆴𑆱𑆵 𑆱𑆥𑆳𑆤𑆼 𑆥𑆳𑆠𑆼𑆠𑆶𑆪

𑆱𑆼𑆠𑆫 𑆃𑆠𑆠 𑆃𑆤𑆑𑆫 𑆢𑆴𑆬𑆼𑆫𑆠𑆼 𑆢𑆴𑆑𑆪𑆳𑆣𑆫 𑆑
𑆠𑆼 𑆑𑆼𑆥 𑆱𑆴𑆁𑆠 𑆱𑆤𑆱 𑆑𑆼𑆱𑆼 𑆤𑆫𑆵 𑆥𑆳𑆫𑆪𑆤𑆼 𑆪𑆠
𑆬𑆼𑆥

𑆑𑆮𑆴𑆠𑇀𑆠

𑆱𑆼𑆠𑆵 𑆑𑆵𑆥𑆠𑆼 𑆱𑆳𑆫 𑆯𑆳𑆢𑆴𑆱𑆁 𑆪𑆑𑆴𑆠 𑆠𑆶𑆂 𑆓𑆶𑆫𑆵𑆫
𑆢𑆼 𑆠𑆶𑆪𑆳𑆤𑆫 𑆱𑆳𑆑 𑆫𑆼𑆤 𑆑𑆼𑆥𑆥𑆑𑆠𑆠𑆼 𑆘𑆥𑆫 𑆠
𑆥𑆪𑆼 𑆥𑆶𑆑 𑆥𑆫𑆑𑆠𑆤𑆑𑆵 𑆓𑆶𑆢𑆳𑆥𑆠 𑆢𑇀𑆫𑆶𑆥𑆢𑆠𑆶𑆪𑆠𑆼
𑆱𑆼 𑆓𑆁𑆨𑆵𑆫 𑆯𑆾𑆑𑆱𑇀𑆪 𑆑𑆫𑆠𑆼 𑆤𑆳𑆁𑆢𑆼 𑆱𑆓𑆫𑆠𑆶𑆓𑆫
𑆫𑆑 𑆱𑆼 𑆢𑆴𑆑𑆳𑆫 𑆑𑆫𑆼 𑆓𑆁𑆨𑆵𑆫𑆥𑆤 𑆑𑆴𑆤𑇀𑆤𑆫𑆼 𑆤
𑆣𑆴𑆫 𑆣𑆳𑆫 𑆥𑆫𑆠𑆼 𑆠𑆴𑆤𑆢𑆼 𑆱𑆳𑆤𑆱𑆑𑆤𑆼 𑆢𑆴𑆫
𑆱𑆠𑆶𑆪𑆠𑆼 𑆱𑆴𑆁𑆠 𑆓𑆤𑆤𑆤 𑆑𑆴𑆱𑆵 𑆱𑆥𑆳𑆤𑆼𑆤 𑆥𑆶𑆫𑆥𑆶
𑆠𑆑𑆼𑆥 𑆥𑆫𑆠𑆼

𑆢𑆾𑆲𑆫𑆳

𑆪𑆂 𑆑𑇀𑆫𑆶𑆠𑆁 𑆑𑆼𑆥𑆑𑆫 𑆓𑆶𑆤𑆼 𑆤𑆼 𑆱𑆳𑆑𑆫 𑆑𑆴𑆪𑆳 𑆱𑆑𑆶
𑆤𑆼 𑆱𑆫 𑆥𑆫 𑆱𑆴𑆁𑆠 𑆱𑆤𑆱𑆫 𑆠𑆶𑆪𑆼 𑆠𑆱𑆼 𑆱𑆪𑆁 𑆤𑆼

[illegible]

संस्कृत

इंद्रः स्वल्पावशिष्टस्तव जयः विद्याधरः देव नैव निरवधि ष्टम्

श्लोक ॥

हत्वा शंतनु नंदनस्य तुरगान् सूत ञ्चहत्वा गुरोः कर्णस्या पिरथं विदार्य कणशः कृत्व विसंज्ञं कृपम् छित्वा द्रोण सु तस्य कार्मुकलतां विद्राव्य चान्यद्बलम् त्वन्नेत्रो भय विद्रवत् कुरुपतेः पंथान मन्वेष्यहम् ॥

अर्थ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

61

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

प्रतिहारी प्रवाहिदं दुर्जोधनः स विद्याधरःनैव
श्लोक विमुखे निपतति भ्रासं संक्रंदन नन्दनस्य नहि जात्
मणिमय मुकुट निपातात् कोपामि त्वस्य कोपितः किंचित्
ते पश्य भो भो राधेय मित्र ॥

मार्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

62

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्लोक

राजात्मजा परिभव क्षुभितः प्रतिज्ञा मार्ग्य स्तवोरु दलने
यदि ना करिष्यत् नूनं स्फुरन् मुकुट पाटन पाटवेन तीक्ष्णः
शरास्तव शिरांसि हरिष्यदेव

अर्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत प्रतीहारी

देव सुद तह उत्सव ग्रणं इंदः स विस्मयम्

ਧ ਦਿ. ਨ ਟੀ. ੬੩

श्लोक दैवात् कल्पे किंनाम न शिवाय प्रकल्पते क्रुद्धभी
म प्रतिज्ञापि ररक्ष कुरु भूपतिं

ਅਰਥ

ਪਾਰਬਤੀ ਜੀ ਕਹਤੀ ਹੈ ਹੇ ਈਸ਼ਰ ਤੇਰੇ ਪੁਤ੍ਰ ਕੋ ਦਯਾਨ ਸੁਨ ਉਗ੍ਰ
ਅਰ ਵਿਘਨਾਯਕ ਹੋਤਾ ਹੈ ਦੈਵ ਕੇ ਅਨੁਕੂਲ ਹੋਏ ਸੇ ਕੌਨ
ਵਸਤੁ ਹੈ ਜੋ ਸੁਖਦਾਈ ਨਹੀਂ ਸਭ ਸੁਖਦਾਈ ਹੋਤੀ ਹੈ ਕ੍ਰੋਧ
ਕਰਕੇ ਭੀਮਸੈਨ ਨੇ ਪ੍ਰਤਿਗ੍ਯਾ ਕਰੀ ਹੈ ਤਥਾਪਿ ਦੁਰਯੋ
ਧਨ ਕੀ ਰਛਿਆ ਕਰ

ਅੰਤਰ

ਪਾਰਬਤੀ ਜੀ ਕਹਤੀ ਲਗਾ ਹੇ ਈਸ਼ਰ ਸੁਨ ਕੰਤ ਪੁਤ੍ਰ ਤੁਮ
ਤੇਰਾ ਕਹਤਾ ਹੈ ਉਗ੍ਰ ਵਿਘਨਾਯ ਹੋਯ ਜਾਤ

ਕਵਿਤ

ਦੈਵਤਾ ਕੇ ਅਨੁਕੂਲ ਹੋਏ ਕੌਨ ਵਸਤੂ ਜੋ ਸੁਖਦਾਈ
ਨਹੀਂ ਅਰ ਸੁਖ ਦੇਤੀ ਹੈ ਕ੍ਰੋਧ ਕਰ ਭੀਮ ਨੇ ਪ੍ਰ
ਤਿਗ੍ਯਾ ਕਰੀ ਹੈ ਤਥਾਪਿ ਦੁਰਯੋਧਨ ਕੀ ਰਛਿਆ ਕੋ
ਕੀਤੀ ॥

ਦੋਹਰਾ

ਕਹੁ ਉਗ੍ਰ ਵਿਘਨਾਯਕ ਸੋ ਤੋ ਦੇਵਨ ਰਾਜ ਨਰਯੋਂ ਤੂੰ ਤਾਜ
ਦਿਖਾਇਰ ਤੁਸਕੇ ਕੁਲ ਰਾਜ ਅਨਾਦਿ: ਭੀਮ ਨੇ
ਅਰੁਤੋ ਸੈਂਗਰ ਸੁਖ ਉਸਕਾ ਕਹੈਂਗਾ ਦੇਖਕੇ ਦੇਖੁ
ਅਨਾਰ ਕਰ ਰਤਨ ਤੂੰ ਉਸ ਦਰਤ ਉਸ ਪਰ ਦਹੁ ਤੋ
ਤੋਲ ਦੁਰਯੋਧਨ ਅਦਰਤ

संस्कृत

विद्याधरः देव दुर्योधन मुकुट पाटन क्षुभितैः कर्ण प्रमुखैः कुरुभिः समंततो वेष्टितो ऽर्जुनः इंद्रः सशोकम् ततस्ततः विद्याधरः देयत्वत्पुत्रेण प्रस्वापनास्त्रं प्रयुक्तम्

श्लोक आमीलिते नयनयुगं प्रथमं प्रसर्पत् निःश्वासवात भरपूरित कंठ घोषम् गंडस्थलानि ह्रितकार्मुक कंटक मं संलक्ष्यते कुरुबलं मृतकल्पमेतत् ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

64

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत इन्द्रः आयोधन श्रांताना शुचित मेतत ततस्ततः
विद्याधरः ॥ श्लोक
एकं शांतनवं हित्वा सर्वे वि वसनाः कृत्वा श्रमस्पलोचने
पश्चात प्रवृद्धाश्च पलायिताः पुनः श्लोक क्रीड़ा भिन्न
हिरण्यशुक्ति कुहरे रक्तात्मजा वर्षितानू हारां हार सुदार
कुंकुमरसा नवाज भया न्नखेः ॥ वीर श्री कुशकुंभ सीम्नि
लिखिता वीरस्य पत्रावली स्तत्कालो चितभाव बंधु मधुरं
मंदस्मितं पातुनः ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

65

[illegible]

संस्कृत

नाद्यंते सूत्रधारः सूत्र स विनयानंदं

श्लोक

निर्जित्य कौरवबलान्यथ वल्लवेभ्यो गास्ताः समर्प्य मुदितै र
भिनंदितस्तैः प्रस्थितः प्रजवनै रथधूलि जाल व्यालोलस
न्नयनै रथ मेति पार्थः॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

इन्द्रः आलोक्य यद्दृष्टव्यं तत् दृष्टव्यम् ततः प्रविशति रथा
रूढो नायकः सूतश्च नायकः सूतं विलोक्य कुमारः न
तथा मोदते चित्ते जित्वा कुरुपतिं रणे यथा हत शरीरेण
त्वया मत्स्येन्द्रनंदन सूतः त्वयि रक्षिते तर्हि किं दुर्लभम् इंद्रः
सरभसम् दृष्ट दृष्टोऽस्म्यहम् इति निष्क्रान्ताः प्रस्तावना:

पार्थ

[illegible]
[illegible]
[illegible]

66

[illegible]

संस्कृत

नायकः संतोषं सूत दुःशासनो यत कोरात् ऊरु सन्निधाने पंचालराज तनयां। प्रहसन् विवस्त्राम् तत्सांप्रतं प्रतिकृतं ह रतो मयात्र निघ्नाण कौरव बलस्य रणे सुकानि ॥

अर्थ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कवित्

[illegible]

संस्कृत

सर्वमेतत्प्रतिकृतं तावच्च श्लोक

संग्राम मरणं नाम कृत दुःखं सुखोत्तरं आजन्म हृदये शल्यं मानभंगो हि मानिनाम्

अर्थ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

68

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

नायकः इतो वलोक्य अथ सोपकरणान्ज आर्य्य आर्य्य विराट इत एवा गच्छति ततः प्रविशति यथा निर्दिष्टा युधिष्ठिर भीम नकुल सहदेवा स परिवारो विराटस्य युधिष्ठिरः मत्स्यराज पश्य पश्य

श्लोक

रथतुरग रजोभि र्धूसर भ्रमस्य जालं श्रम जल कणिकाभि

भीस्वराभि परीतं असम समरकर्मा क्रांत मध्यस्य वक्रं ज
यति विजयलक्ष्मी संग संपत् स्वशोभम्

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

विराटः श्लोक शोभंते विद्यया विप्राः क्षत्रिया विजय
श्रिया श्रियोत्र कुलदानेन लज्जया कुल पालिकाः

अर्थ

[illegible] युधिष्ठिर [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ध दि
न टी.
७.

तु पाये तुडै गेद दउवुर टः रउये

संस्कृत

नायक स संभ्रमं अये कथ मार्य्याः रथा दवतीर्य यथोचि
त मभिवादयते सर्वे अभि नन्दन्ति

श्लोक

एको हर द्विष शराणि हरः खरादीन् एकश्च दंडक वने
स्ववधीत् स रामः एकोधुना अरु बलानि भवान जैषीत्
नै त्तिच पुनः पुरुष स्वतर्थः ॥

अर्थ

नायक पाशुराये दल डैपर वुडउडै वेह प
येय रथस् उडुडर ववर यथ येगाय पातिदय
न वर्डडै संपूर्ण पातिनेमन ववतेभुये पर
डी गउडेर शिदकी नय शुरवै पुरैरै मग
धवरतेभुये उंर परडी रगयनवुर संडवर द
नदिमें भरखिर गै रङम तिनरै गरतेभुय
उंर परडी पाहुंन दूं छप मगय नें उंरदेंवी न
न कीउड भुय छन परलउडें ठेर उंर यतुर्थ पु
रुम नपुननडै नछपडै

कंडर नायक संवुग वउउडै रथस् भुगी नूछ
यथ येगाय दंधन वरउ मर पाति नंखिउ गूछ

वदिरुउ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत

नायकः सखेत्व युष्माकं प्रसादः विराटः ने मध्याभिमुख
मवलोक्य राजपुत्र पश्य पश्य

श्लोक

वत्सालोक प्रस्तुता मीनभाजः संचिन्त्यः त्वां नीरधाराश्चले
न चंद्रालोक स्पर्द्धिनी येनवत्स कीर्ति मूर्ती नून मेनाः स्रजंति

अर्थ

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

71

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्क्रत

अर्जुनं संबोध्य श्लोक मध्ये सभं यो द्रुपदात्मजाया स्वकर्ष केशान् धृतराष्ट्र पुत्रः निर्यात्य मेतत्सकृदं निपात्य निर्यातितं तस्य सुयोधनस्य

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

72

संस्कृत

तच्छ्रुत्वा भीमः सामर्षम् भो भो राजन्नैतत् प्रतिकृतं भवति किंतु श्लोक दुःशासनस्य गदया प्रविदार्य्य वक्षः सद्यः कदुष्ण रुधिराणि ततो निपीय तच्छोणितार्द्र ललितां स्वनियम्य देव्या वेणीं त्व तत् करिष्यति भीम एव

अर्थ

[illegible]

मरैय

कीर वुःशा ष्ठरहे वरश्‌ मपहे वरमें गव्यली
सिवली छेड दबुमयल उ‍ऽडिमें उ‍ऽवै उपाहे
मे ढेर येंवीसीवली शीध्ववडी षैाश्त पाव
वर उँर उ‍ऽडीवै मै नल वीसीवली गूंथ छिमै
नेडे अरैंगडिडी डिमद दमल भीनलीसीव
की

दयद्

नगार दः धन नेर निवलेगा मुगणे दलाय:
वन वद डैडाया मुगणे नेडे पाद कीर वर
गुवके कुशा ष्ठर वरैंगा गडलुये कुशा नरनें
वैलद् पियेंगा भूर मै दंमे दडेगा नः मदड
व यः वरैंगा धन वडेगा

संस्कृत

युधिष्ठिरः वत्स किमसाध्यं त्वया
लीलोन्मूलित कौवेर सौगंधिक वनश्रियः लीलाह
त हिडंबस्य विक्रमं ते कृणाह्निकः भीमः श्रुत्वा सात्त
नयं श्रेणात्वार्य्यः नत्वमेऽहम् युधिष्ठिरः अतीतः का
लः क्षमाया आसनश्च कालो विक्रमस्य अलमत्र नयेन
विराटः युधिष्ठिरं प्रति

श्लोक

अजानतो नियुक्तस्य यद योगेषु कर्मसु क्षन्तव्यं तन्म
हाभाग नज्ञात मपराध्यति ॥

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

73

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

संस्कृत नायकः

राज उपकार एवायं नापकारः
श्लोक यदि कर्म स्वयोग्येषु त्वमस्मा न्न्मयोन्यथाः
शास्त्रातवासं राजायं नाकरिष्यत् महाउजेः ॥

पार्थ ॥

𑆣 𑆢𑆴𑆁
𑆤 𑆝𑆵𑆁
𑇗𑇔

74

𑆤𑆳𑆥𑆫𑆫𑆠𑆠𑆳𑆠𑆼 𑆠𑆓𑆫𑆳𑆫𑆠𑆵 𑆠𑆼𑆤𑆼𑆫𑆵𑆪𑆳 𑆠𑆼 𑆫𑆳𑆘𑆤𑆾
𑆩𑆳𑆓𑆫𑆳𑆫𑆤𑆠𑆵𑆁 𑆑𑆵𑆪𑆠𑆼 𑆑𑆴𑆩𑆑𑆳𑆫𑆳𑆫𑆳𑆠𑆼 𑆠𑆷𑆁𑆠𑆳𑆩
𑆢𑆽𑆫 𑆩𑆪𑆽𑆓𑆷𑆪 𑆑𑆫𑆳𑆤𑆢𑆴𑆩𑆼𑆁 𑆤𑆠𑆵 𑆢𑆴𑆪𑆽𑆑𑆤 𑆑𑆴𑆪𑆠𑆼
𑆈𑆩𑆵𑆘 𑆫𑆳𑆘𑆳 𑆪𑆶𑆣𑆴𑆰𑇀𑆜𑆴𑆫 𑆧𑆷𑆠𑆳𑆫𑆾 𑆩𑆢𑆴𑆠 𑆢𑆴𑆤𑆳𑆘𑆳𑆤𑆾
𑆤𑆠𑆵𑆁 𑆢𑆴𑆢𑆳𑆑𑆫𑆫𑆠𑆳𑆣 𑆯𑇀𑆬𑆺𑆑
𑆤𑆳𑆪𑆑𑆑𑆠𑆠 𑆩𑆣𑆵𑆤𑆠𑆼 𑆥𑆑 𑆑𑆳𑆠 𑆪𑆠 𑆑𑆵𑆤 𑆠𑆓𑆫𑆳𑆫
𑆝𑆵𑆫𑆠𑆼 𑆫𑆠𑆳 𑆑𑆑𑆶 𑆩𑆳𑆓𑆑𑆳𑆫𑆤 𑆑𑆵𑆤

𑆑𑆬𑆩𑆼

𑆩𑆪𑆽𑆓𑆷𑆪 𑆑𑆫𑆳𑆤𑆼𑆁 𑆤𑆠𑆵𑆁𑆠𑆩𑆼𑆁 𑆠𑆷𑆩 𑆘𑆼𑆁 𑆘𑆤𑆑𑆵𑆤𑆳 𑆫𑆳𑆘𑆳
𑆪𑆶𑆣𑆴𑆰𑇀𑆜𑆴𑆫 𑆧𑆷𑆠 𑆩𑆓𑆳 𑆢𑆴𑆤 𑆓𑆳𑆩𑆤 𑆤𑆑𑆵𑆤𑆳 𑆢𑆴𑆫𑆳𑆢𑆤𑆳
𑆪𑆫 𑆥𑆫𑆠𑆴𑆑𑆠𑆠 𑆫𑆳𑆘𑆶𑆘𑆫 𑆪𑆠 𑆘𑆳𑆤𑆼 𑆩𑆳𑆠 𑆑𑆶𑆩𑆳𑆤
𑆩𑆓𑆳𑆪𑆘𑆼 𑆠𑆳𑆫𑆷𑆫𑆼 𑆘𑆴𑆢 𑆘𑆼𑆁 𑆩𑆳𑆤𑆼 𑆘𑆼 𑆪𑆠 𑆩𑆼𑆫𑆵 𑆘𑆴𑆢𑆠𑆳
𑆩𑆠𑆼 𑆩𑆠𑆳𑆫𑆳𑆠𑆼 𑆪𑆼𑆓𑆪𑆠𑆼 𑆈𑆩𑆠𑆼𑆁 𑆠𑆷𑆩𑆳𑆫𑆵 𑆥𑆳𑆫𑆳𑆪𑆼𑆤𑆳 𑆩
𑆫𑆘𑆶𑆤 𑆠𑆩𑆫𑆽 𑆧𑆷𑆁𑆓𑆠𑆼

𑆯𑇀𑆬𑆺𑆑

𑆠𑆩𑆳𑆫𑆵 𑆑𑆑𑆶𑆪𑆳 𑆠𑆠𑆠𑆳 𑆩𑆘𑆶𑆩𑆳 𑆠𑆷𑆩𑆳𑆫𑆵 𑆠𑆼𑆪 𑆤𑆳𑆪𑆑
𑆑𑆠𑆠𑆳 𑆥𑆶𑆫𑆤𑆵 𑆠𑆶𑆘𑆵 𑆤𑆑𑆩𑆳𑆤𑆼𑆠𑆼 𑆘𑆼𑆪

𑆮𑆑𑇀

𑆑𑆠𑆳 𑆩𑆳𑆑𑆘𑆶𑆤𑆼 𑆠𑆷𑆩𑆤𑆼 𑆑𑆷𑆪𑆳 𑆩𑆠𑆳𑆫𑆪𑆵 𑆘𑆼 𑆑𑆷𑆘 𑆩𑆩

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

संस्कृत

विराटः नायकं प्रति राजपुत्र श्लोक सखे प्राप्त पदी
नं यत् सोऽधमः प्रणयो मम प्रतत्वा मर्थये किंचि उत्तरा
मे स्वषास्तते नायकः यद्योचते भवते श्लोक
स्वयं मायांती गेहे लक्ष्मी कोना विमन्यते मूढः दैवात्
कुल ता यदयाचित माप्यते ऽभीष्टम्

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

75

[illegible]

॥

संस्कृत

विराटः किंते भूय ऽप्यपकरोमि नायकः   श्लोक

निस्तीर्णो ज्ञातवासो रणभुवि विजिता धार्तराष्ट्राः सक
र्णाः स्त्रीरत्नं त्वत्तनूजा समजनि तनय स्याभिमन्योः क
लत्रम् गावः प्रत्या हृताश्च सुहृदपि परम स्त्वं च नः स्था

वनीयः तज्ज्ञाने नैव किंचित् स्वचिर मव मशान् यत्न
या प्रार्थनीयम् ॥ ਮਾਰਥ

ਵਿਰਾਟ ਰਤਨਤੁਯਾ ਤੌਰ ਕ੍ਯਾ ਕੁਆਰੀ ਜੈਂ ਮੁਰਾਗਤ ਰਰ
ਜਾਤੈ ਨਾਯਰ ਰਤਨਤੈ ਕੁਆਰੇ ਗੁਤ ਵਿਸੇ ਮਾਕਾਤ
ਦਾਮਕਰਮਾਤੈ ਤੌਰ ਰਜਾਕੁਮਿ ਵਿਸੇਂ ਸਾਂਮੂਰਜਾ ਰੈਰਰ
ਰਰਜਾਮਡਿਤ ਲੀਤਤੈਂ ਤੌਰ ਮੁਤ ਜੇ ਮਾਤ੍ਰਿਮਨਸੁ ਤਿ
ਮਰੇ ਦਾਮਤੇ ਤੇਰੀ ਮੁਤੀ ਸਾਂਮਾਯਨਰਰੀਤੈ ਤੌਰ ਗੈਯਾਂ
ਲੋਗਾਯ ਜੇ ਰੈਰਰ ਤਿਨਕੇ ਗੰਧਨ ਤੇਮਰੇ ਲਯਾਮਾਂ
ਤੇ ਵਿਰਾਟ ਕੂੰਤੀ ਤਆਰ ਮਰਮ ਮਨੇਤੀਤੈ ਸੌਰ ਕੂੰਤੀ
ਮਾਸੇਂਰੇ ਸ਼੍ਰਾਲਾਯਾਰਰਜਾ ਧੈਗਾਯਤੈ ਮਾਰਜਨ ਰਤਨਤੈ
ਜੈ ਨਤੀ ਜਾਨਤਾਂ ਜੇ ਯਾਮਨੇ ਧੈਗਾਯਤੈ ਜੈਰੇ ਸਾਤੈ ਰੇ

ਰਵਿਸਤ

ਵਿਰਾਟਮੁਰਤਿ ਨਾਯਰਰਤੈ ਕੁਸੀ ਤੇਰੀ ਸਾਂਤੈ ਮਾਨਰੁਪ
ਤਮਰਰ ਮਾਕਾਤਦਾਮਰੀਜਤੈ ਮੁਤ ਮਾਤ੍ਰਿਮਨਸੁਤ
ਰੇ ਲਿਪ੬ਮੁਤਾ ਤੇਰੀ ੬ਮਤੀ ਰੁਮਰ ਤਨ ਸਾਂਮਾਯਨਰ
ਰ ਲੀਜਤੈ ਗੰਧਨ ਕੁਕਾਯ ਮਰਮ ਮਨੇਤੀ ਕੁਮ ਰਤਾ
ਧੇ ਸ਼੍ਰਾਲਯਾਰਰਜਾ ਧੈਗਾਯ ਕੁਮਰੇਂ ਮਕੁਰੀਜਤੈ
ਸੈਤਾ ਤੌਰ ਜੈ ਨਤੀ ਜਾਨਤਾ ਕੁਮਰੇ ਸੈਂਗਨ ਧੈਗ ਪ
ਸੀ ਦਮਨੂ ਰੈਨਤੈ ਜਾਸੈਂ ਕੁਗਾਕੁਗ

[illegible]

[illegible]

76

संस्कृत

तथापीदमस्त्र श्लोक सौजन्या मृत सिंधवः परहित प्रा
रंभवीर ब्रता वाचालः पर वर्णने निजगुणा लापेच मौनब्रताः
प्रापत्स्वप्य विलुप्त धैर्य निचयाः संपत्स्वत्तत्सेकिनो माभूव
न् खलवक्त्र निर्गत विष ज्ञाना नना सज्जनाः

अर्थ

[illegible]

[illegible]

संस्कृत श्लोक

सारस्वतं स्फुरतु चेतसि सत्कवीनां वक्त्रे भवंतु कृतिनो
गत मत्सराश्च भूपाश्च संतु कविसूक्तिषु सानुरागाः संत्यज्य
मंडल कवि प्रणयात् रागम् विराटः तयास्तु इति निष्क्रांताः
सर्वे ॥

अर्थ

[illegible]

इति श्री पद्मनाभविजयनाटकस्य श्रीमद्[illegible]
द्वितीयं समाप्तम्

सवैय

[illegible]

[illegible]

इति श्री [illegible] नाटक [illegible]

इति श्री [illegible] नाटक संपूर्ण [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] १

[illegible]

ध वि
पं सं.
७८

78

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

समाप्तम्

यह धनंजयविजय नाटकका पुस्तक श्रीमन्महा
राजा साहिब रणवीरसिंह बहादुर जी सी एस
आइ इंद्र महेंद्र सिपर सल्तनत् जंबू काश्मी
र व तिब्बतादिपतिके पढनेकोहै ॥

धनंजयविजयनाटक